परोपकाराय सतां विभूतयः

१७

श्रावकस्य.

पञ्चप्रतिक्रमणादिसूत्राणि.

स्वधर्मी भाइओ व्हेनोने वांचवा जाणवा निमित्ते

छपावी प्रसिद्धकर्ता,

श्री जैन श्रेयस्कर मंडल—म्हेसाणा

आवृत्ति २ जी नकल ५०००

श्री मुंबइ—कोलभाटलेन निर्णयसागर प्रेसमां

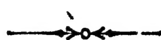
रा. य. शेडगेए छाप्युं.

वीर संवत् २४४० संवत् १९७० सन १९१४

Published by Venichand Surchand, Shah. Secretary
Shri Jain Shreyaskar Mandal, Mhesana.

Printed by R. Y. Shedge at the "Nirnaya-sagar
Press," 23, Kolbhat Lane, Bombay

 सूचना. 



पुस्तकने जेम तेम ज्यां त्यां रखडतुं मूकी आशातना करवी नहि. तेमज अशुद्ध हाथे पुस्तकने अडकवुं नहि. उघाडे मुखे पुस्तक वांचवुं नहि.

मंगल.

जैनो धर्मः प्रकटविभवः संगतिः साधुलोके, विद्वद्गोष्ठी वचनपटुता कौशलं सत्क्रियासु।साध्वी लक्ष्मीश्चरणकमलोपासना सद्गुरूणां, शुद्धं शीलं मतिरमलिना प्राप्यते नाल्पपुण्यैः ॥ १ ॥

सार—प्रगट प्रभाववालो जैनधर्म, संत-सुसाधु जनोनी संगति, ज्ञानी पुरुषो साथे गोष्टी, वाक्चतुराइ, शुभकरणीमां कुशलता, न्यायोपार्जित लक्ष्मी, सद्गुरुना चरणकमलनी उपासना, निर्मलशील अने शुद्धमति, एटलां वानां प्रबल पुण्ययोगेज प्राप्त थइ शके छे.

उपोद्‌घात.

जैन कोममां वांचन पठननो बहोलो फेलावो करवाना उद्देशथी अमो विद्वान् मुनिमहाराजाउ अने सुज्ञ श्रावकोनी चालु जमानानी कसायेली कलमथी लखायेला पूर्वाचार्यप्रणीत ग्रंथोनां नाषांतरो अने मूल ग्रंथो उदार दीलना सद्‌गृहस्थोनी उत्तम सहानुनूतिवडे मुद्रित करावी, तेना खपी जीवोने विनामूल्ये यातो नजीवी कीमते आपीए ठीए; जेना परीणामे आ सत्तरमुं पुस्तक वहार पाडवामां अमे फतेहमंद थया ठीए.

श्री नावनगर जैनधर्मप्रसारक सन्ना तरफथी प्रसिद्ध थयेला पंचप्रतिक्रमणना पुस्तकमां केटलाक फारफेर साथे योग्य सुधारो वधारो करी, आ ग्रंथ प्रसिद्ध विद्वान् मुनिवर्य पासे जुनी प्रतो अने संस्कृत अवचूरीउना आधारे वारीकीथी संशोधन करावी प्रसिद्ध कराव्यो ठे, जेथी अत्यार सुधीमां ठपायेला प्रतिक्रमणना पुस्तकोना करतां कोइ कोइ पाठ फेरफार

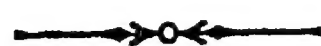
लागशे. माटे सज्जन बंधुउने विज्ञप्ति करवानी के तेमणे आ ग्रंथनी कंइ भूलनो सुधारो करवा पहेला हरकोइ विद्वान् मुनिराजनी सलाह पूछवी. आ ग्रंथ छपाववामां शुद्धि तरफ पूरतुं लक्ष्य आपवामां आव्युं छे, तेम छतां मतिदोषथी या तो प्रमादवशथी कांइ पण भूल चूक थइ होय तो ते सुधारीने वांचवा जणवा विनंति करवामां आवे छे.

आ ग्रंथनी पहेली आवृत्ति थोमा वखतमां खपी जवाथी आ बीजी आवृत्ति ताकीदे बहार पामवानी जरूरपमी छे. आ वखत छपामणी वगेरेनो खर्च वधवा छतां कीमत सरखीज राखी छे.

आ ग्रंथ छपाववामां जे महाशयोए द्रव्यनी सहाय आपी छे अने जे महाशयोए प्रुफ सुधारवामां कीमति मदद आपी छे ते सर्वनो अंतःकरणथी आभार मानवा साथे आवां कार्योमां ते महाशयो तरफथी वधारे सहानुभूति मले एम इछी विरमुं छुं.

ली. प्रसिद्धकर्ता.

शुद्धिपत्रकम्.



पृष्ठ	लीटी	अशुद्धम्	शुद्धम्.
३१	१	उ	उँ
३९	७	ह्री	ह्रीं
३९	७	ह्र	ह्रूं
४७	१	अर्हत-	अर्हन्त-
६१	१२	न्नमी	न्नूमी
१५२	१	चउसीस	चउतीस
१७३	१२	उन्निद्रहमे-	उन्निद्रहेम-
१७६	१७	विन्नूर्वि-	विन्नुर्विधातुम्.
१८२	१३	नमत्रि-	नमत्रि-



अनुक्रमणिका.





॥ अथ ॥

॥ श्रावकस्य पञ्चप्रतिक्रमणादिसूत्राणि ॥

१ प्रथमं नमस्कारसूत्रं (पंचमंगलरूपम्)॥

नमो अरिहंताणं॥ १ ॥नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंचनमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्व-पावप्पणासणो ॥७॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ८ ॥ इति ॥ १ ॥

पद [९] संपदा [८] गुरुवर्ण[७] लघुवर्ण [६१]सर्ववर्ण [६८]

२ ॥ अथ पंचिंदिअसुत्तं ॥

पंचिंदिअसंवरणो, तह नवविहबंभ-चेरगुत्तिधरो ॥ चउविहकसायमुक्को, इअ अट्ठारसगुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमह-व्वयजुत्तो, पंचविहायारपालणसमत्थो ॥

पंचसमिउ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरू मज्झ ॥ २ ॥ इति ॥ २ ॥

गाथा [२] पद [८] गुरु [१०] लघु [७०] सर्ववर्ण [८०]

३ ॥ अथ खमासमणसुत्तं ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

गुरु [३] लघु [२५] सर्ववर्ण [२८]

४ ॥ अथ सुगुरुने साता सुखपृच्छा ॥

॥ इच्छकार सुहराई[1] सुहदेवसि[2], सुखतप शरीर निराबाध ॥ सुखसंजमजात्रा निर्वहो छोजी, स्वामी साता छेजी ? जातपाणीनो लाभ देजो जी ॥ इति ॥ ४ ॥

५ ॥ अथ इरियावहियसुत्तं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए, विराह-

१ बपोर पहेलाना वखतमां कहेवुं. २ बपोरपछीना वखतमां कहेवुं.

णाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाण-
क्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, उसाउत्तिं-
गपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे ॥४॥
जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया
बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया
॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया संघा-
इया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्द-
विया ठाणाउ ठाणं संकामिया जीवि-
याउ ववरोविया तस्स मिछामि डुक्कडं
॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

पद [२६] संपदा [७] गुरु [१४] लघु [१३६] सर्ववर्ण [१५०]

६ ॥ अथ तस्सउत्तरीसुत्तं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायछित्तकरणेणं,
विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं
कम्माणं, निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्गं
॥ ८ ॥ इति ॥ ६ ॥

पद [६] संपदा [१] गुरु [१०] लघु [३९] सर्ववर्ण [४९]

७ ॥ अथ अन्नत्थऊससिएणंसुत्तं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंन्नाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं नमलीए पित्तमुछाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं, अन्नग्गो अविराहिउ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं नगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ६ ॥ इति ॥ ७ ॥

पद [२८] संपदा [५] गुरु [१३] लघु [१२७] सर्ववर्ण [१४०]

८ ॥ अथ लोगस्ससुत्तं ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसन्नमजिअं च वंदे, संन्नवमन्निणंदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं

सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥ विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ॥ वंदामि रिठनेमिं, पासं तह वद्ध-माणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीणजरमरणा ॥ चउवीसंपि जि-णवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तियवं-दियमहिया, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अ-हियं पयासयरा ॥ सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥ ८ ॥

गाथा [७] पद [२८] संपदा [२८] गुरु [२७] लघु [२२९] सर्ववर्ण [२५६]

९ ॥ अथ सामायिकसूत्रम् ॥

॥ करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं

जोगं पच्चक्खामि ॥ जाव नियमं पज्जुवासामि, डुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ए ॥

गुरु [७] लघु [६ए] सर्ववर्ण [७६]

१० ॥ अथ सामायिक पारवानुं सूत्र ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो ॥ छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअ जत्तिआ वारा ॥ १ ॥ सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावर्ज हवइ जम्हा ॥ एएण कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥२॥ सामायिक विधे लीधुं विधे पार्युं, विधि करतां जे कोइ अविधि हुर्ज होय ते सवि हुं मनवचनकायाए करी मिहामि डुक्करं ॥ दश मनना, दश वचनना, बार कायाना, ए बत्रीश दोषमांहे जे कोइ

दोष लाग्यो होय ते सवि हुं मन-वचन-कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥१०॥

गाथा [२] गुरु [७] लघु [६७] सर्ववर्ण [७४]

११ ॥ अथ जगचिंतामणिचैत्यवंदनम् ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्य-वंदन करुं? इच्छं ॥ जगचिंतामणि जग-नाह, जगगुरु जगरक्खण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह, जगभावविअक्खण ॥ अ-ठावयसंठविअ-रूव कम्मठविणासण ॥ चउवीसंपि जिणवर, जयंतु अप्पडिहय-सासण ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं, पढमसंघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरिसय, जिण-वराण विहरंत लब्भइ ॥ नवकोडिहिं केव-लिण, कोडिसहस्स नव साहु गम्मइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुंकोडिहिं वरनाण ॥ समणहकोडि सहसदुअ, थुणि-जइ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउ सामिय

जयउ सामिय, रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जिंत पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण ॥ भ-रुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरि-अखंडण ॥ अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि ॥ तीआणागयसं-पइअ, वंदू जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणव-इसहस्सा, लक्का छप्पन्न अठकोडिउ ॥ बत्तिसय बासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पनरसकोडिसयाइं, कोडिबा-याल लक्क अडवन्ना ॥ छत्तीससहस अ-सिइं, सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ १२ ॥ अथ जंकिंचिसुत्तं ॥

॥ जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ॥ जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

गाथा [१] पद [४] संपदा [४] गुरु [३] लघु [२९] सर्ववर्ण [३२]

१६ ॥ अथ नमुत्थुणंसुत्तं वा शक्रस्तवः ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं॥ १॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं॥ २॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिवसरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जि-

णाणं, जिअनयाण ॥ए॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ नविस्संतिणागए काले ॥ संपइ अ वट्टमाणा, सवे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

पद [३३] संपदा [ए] गाथा [१] गुरु [३३] लघु [२६४] सर्ववर्ण [२ए७]

१४ ॥ अथ जावंतिचेइआइंसुत्तं ॥

॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ ॥ सवाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १४ ॥

गाथा [१] संपदा [४] पद [४] गुरु [३] लघु [३२] सर्ववर्ण [३५]

१५ ॥ अथ जावंतकेविसाहूसुत्तं ॥

॥ जावंत केवि साहू, नरहेरवयमहाविदेहे अ ॥ सवेसिं तेसिं पणउ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥

पद [४] संपदा [४] गाथा [१] लघु [३७] गुरु [१] सर्ववर्ण [३८]

१६ ॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ १६ ॥

१७ ॥ अथ उवसग्गहरंस्तवनम् ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी—दुठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठ्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा, पावंति न दुरकदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लध्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए ॥ पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुउ महायस !, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण ॥ ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे

भवे पासजिणचंद !॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥
गाथा[५]लघु [१५६] गुरुवर्ण [२९] सर्ववर्ण [१८५]

१८ ॥ अथ जयवीयरायसुत्तं ॥

॥ जय वीअराय ! जगगुरु!, होउ ममं तुह पभावओ भयवं !॥ भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ॥ सुहगुरुजोगो तव्वय–णसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥ वारिज्जइ जइवि निआ-णबंधणं वीयराअ ! तुह समए ॥ तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ डुक्खखओ कम्मखओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ, संपजउ मह एअं, तुह नाह! पणामकरणेणं ॥ ४ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम्॥ प्रधानं सर्वधर्म्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति ॥१८॥
गाथा [५] पद [२०] संपदा [२०] गुरु [१९] लघु [१७२] सर्ववर्ण [१९१]

१ए ॥ अथ अरिहंतचेइयाणंसुत्तं ॥

अरिहंतचेइयाणं, करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥ वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए ॥२॥ सध्दाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ अन्नत्थ० ॥ इति ॥ १ए ॥

संपदा [३] पद [१५] गुरु [१६] लघु [७३] सर्ववर्ण [८ए]

२० ॥ अथ कल्लाणकंदंस्तुतिः ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तउ नेमिजिणं मुणिंदं, पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं ॥ भत्तीइ वंदे सिरिवध्दमाणं ॥ १ ॥ अपारसंसारसमुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणिंदा सुरविंदवंदा ॥ कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेसकुवा-

इदप्पं ॥ मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदिंडुगोक्खीरतुसारवन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्गहत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥ ४ ॥

२१ ॥ अथ स्नातस्यास्तुतिः ॥

॥ स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्या विभोः शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रान्त्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशङ्कया ॥ वक्त्रं यस्य पुनः पुनः स जयति, श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवाम्भोभृतैः ॥ कुम्भैरप्सरसां पयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिः काञ्चनैः ॥ येषां मन्दररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥२॥ अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशाङ्गं

विशालं, चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभै-
र्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतच-
रणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं, भक्त्या नित्यं
प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम्
॥ ३ ॥ निष्पङ्कव्योमनीलद्युतिमलसदृशं
बालचन्द्राभदंष्ट्रं, मत्तं घण्टारवेण प्रसृतम-
दजलं पूरयन्तं समन्तात् ॥ आरूढो दि-
व्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी,
यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्व-
कार्येषु सिद्धिम् ॥ ४ ॥ इति चतुर्दशीया
श्रीमहावीरजिनस्तुतिः ॥ २१ ॥

२२ ॥ अथ संसारदावानलस्तुतिः ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधू-
लीहरणे समीरम् ॥ मायारसादारणसार-
सीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥
भावावनामसुरदानवमानवेन—चूलाविलो-
लकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताभिन-

तल्लोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसङ्गमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरुगममणीसङ्कुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला, झङ्कारारावसारामलदलकमलागारभूमिनिवासे ॥ छायासम्भारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वाणीसन्दोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि ! सारम् ॥ ४ ॥

गाथा [४] पद [१६] संपदा [१६] सर्व (लघु) वर्ण [२५२]

२३ ॥ अथ पुक्खरवरदीसुत्तं ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ ॥ भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाध-

रस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स ॥ २ ॥
जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-
पुक्खलविसालसुहावहस्स ॥ को देवदाण-
वनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुव-
लब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो ! पयउ
णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं-
नागसुवण्णकिन्नरगण-स्सब्भूअभावच्चिए॥
लोगो जत्थ पइठिउ जगमिणं, तेलुक्कम-
च्चासुरं ॥ धम्मो वड्ढउ सासउ विजयउ,
धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥
सुअस्स भगवउ करेमि काउस्सग्गं, वंद-
णवत्तिआए० इति ॥ २३ ॥

गाथा [४] पद [१६] संपदा [१६] गुरु [२४] लघु [१०२]
सर्ववर्ण (२१६)

२४ ॥ अथ सिद्धाणंबुद्धाणंसुत्तं ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं,पारगयाणं परंपरगयाणं ॥
लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं

॥१॥ जो देवाणवि देवो,जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ संसारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जितसेलसिहरे,दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं॥ परमठ्ठनिठ्ठिअठ्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २४ ॥

गाथा [५] पद [२०] संपदा [२०] गुरु [२५]
लघु [१५१] सर्ववर्ण [१७६]

२५ ॥ अथ वेयावच्चगराणंसुत्तं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिठ्ठिसमाहिगराणं ॥ २५ ॥ करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ० ॥

२६ ॥ अथ भगवानादि वंदन ॥

भगवान् हं ॥ आचार्य हं ॥ उपाध्याय हं ॥ सर्वसाधु हं ॥ इति ॥ २६ ॥

२७॥ अथ देवसिअपडिक्कमणे ठाउं सुत्तं॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिअपडिक्कमणे ठाउं? इच्छं, सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिठिअ, मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥२७॥

२८ ॥ अथ इच्छामि ठामिसुत्तं ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिउं अइआरो कउं, काइउं वाइउं माणसिउं, उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाउं, दुव्विचिंतिउं, अणायारो, अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो, नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खा-

वयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति २८ ॥

गुरु [२९] लघु [१३८] सर्ववर्ण [१६७]

२९ ॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि॥आयरणं आयारो,इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे ॥ वंजणअत्थ-तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ, निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अ-मूढदिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिँ समिईहिँ तीहिँ गुत्तीहिं ॥ एस च-रित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ बारसविहंमिवि तवे, सब्भिंतरबाहिरे कुस-लदिट्ठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो

सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसणमूणोअ-रिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाउ ॥ कायकिलेसो संली-णया य बज्झो तवो होई ॥६॥ पायछित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सज्झाउ ॥ झाणं उस्सग्गोवि य, अब्भिंतरउ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणिगूहिअबलविरिउ, परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ॥ जुंजइ अ जहाथामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥ ८ ॥ इति २९ ॥

३० ॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इछामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि ॥ अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? ॥ जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सि-

आए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देव-सिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिछाए, मणडुक्कडाए, वयडुक्क-डाए, कायडुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मा-याए, लोज्जाए सव्वकालिआए, सव्वमि-छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसा-यणाए, जो मे अइयारो कउ, तस्स खमास-मणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पा-णं वोसिरामि ॥३०॥

बीजीवारने वांदणे "आवस्सिआए" पद न कहेवुं, अने राइये "राइ वइक्कंता", पक्खीये "पक्खो वइक्कंतो", चउमासीये "चउमासी वइक्कंता" अने संवछरीए "संवछरो वइ-क्कंतो" ॥ एवी रीते पाठ कहेवो ॥ इति ३०॥

पद (५८) गुरु (२५) लघु (२०१) सर्ववर्ण (२२६)

३१ ॥ अथ देवसिअं आलोउंसुत्तं ॥

॥ इछाकारेण संदिसह जगवन् ! देव-

सिज्ञं आलोउं? इछं, आलोएमि जो मे० इति ॥ ३१ ॥

३२ ॥ अथ सातलाख ॥

॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्काय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ बे लाख बेइंडिय ॥ बे लाख तेइंडिय ॥ बे लाख चौरिंडिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंडिय ॥ चौद लाख मनुष्य ॥ एवंकारे चोराशी लाख जीवयोनिमांहि, महारे जीवे जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये अनुमोद्यो होय, ते सर्वे मनवचनकायाए करी तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ३२ ॥

३३ ॥ अथ अढारपापस्थानक ॥

॥ पहेले प्राणातिपात[1], बीजे मृषावाद[2], त्रीजे अदत्तादान[3], चोथे मैथुन[4], पांचमे परिग्रह, छठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, अग्यारमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान[5], चौदमे पैशून्य[6], पन्नरमे रति-अरति, सोलमे परपरिवाद[7], सत्तरमे मायामृषावाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानमांहि, म्हारे जीवे जे कोइ पाप सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां प्रत्ये अनुमोद्युं होय, ते सर्वे मने, वचने, कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ ३३ ॥

३४ ॥ अथ सव्वस्सवि ॥

॥ सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भा-

---

१ जीवहिंसा. २ जुठुं. ३ चोरी. ४ स्त्रीसेवन, ५ कलंक. ६ चाडी. ७ परनिंदा.

सिअ, उच्चिठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भग-
वन्! इच्छं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥इति॥३४॥

३५ ॥ अथ श्रावकवंदितासूत्रम् ॥

॥ वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ
सव्वसाहू अ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं, साव-
गधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइ-
आरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सु-
हुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरि-
हामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे
बहुविहे अ आरंभे ॥ कारावणे अ करणे,
पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदि-
एहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रा-
गेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि
॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंक-
मणे अणाभोगे ॥ अभिउगे अ निउगे,
पडिक्कमे० ॥५॥ संका[1] कंख[2] विगिच्छा[3], पसंस[4]
तह संथवो कुलिंगीसु[5] ॥ सम्मत्तस्सइ-

आरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे,
पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तठा
य परठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥
पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्ह-
मइयारे ॥ सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे०,
॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवा-
यविरईउ ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ प-
मायप्पसंगेणं ॥९॥ वह[1] बंध[2] छविछेए[3], अइ-
भारे[4] भत्तपाणवुछेए[5] ॥ पढमवयस्सइआरे,
पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमी,
परिथूलगअलिअवयणविरईउ ॥ आयरि-
अमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥
११॥ सहसा[1] रहस्से[2] दारे[3], मोसुवएसे[4] अ
कूडलेहे[5] अ ॥बीयवयस्सइआरे, पडिक्कमे०
॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमी, थूलगपरदव्व-
हरणविरईउ ॥ आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ
पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहड[1]प्पउगे[2],

तप्पडिरूवे[३] विरुद्धगमणे[४] अ ॥ कूडतुल-कूडमाणे[५], पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थे अ-णुव्वयंमि, निच्चं परदारगमणविरईओ ॥ आय-रिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ[१] इत्तर[२], अणंग[३] वीवाह[४] तिव्व अ-णुरागे[५] ॥ चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पं-चमंमि आयरि-अमप्पसत्थंमि ॥ परिमाणपरिच्छेए, इत्थ प-मायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न १ खित्त-वत्थू २, रूप्प सुवण्णे ३ अ कुविअपरिमा-णे ४ ॥ दुपए चउप्पयंमि य ५, पडिक्क-मे० ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसा-सु उड्ढं १ अहे २ अ तिरिअं ३ च ॥ वुड्ढि ४ सइअंतरद्धा ५, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि १ अ मंसंमि २ अ, पु-प्फे ३ अ फले ४ अ गंधमल्ले ५ अ ॥ उव-भोग परीभोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥

२० ॥ सच्चित्ते १ पडिबद्धे २, अपोल ३ दु-
प्पोलिअं ४ च आहारे ॥ तुच्छोसहिभक्खण-
या ५, पडिक्कमे० ॥२१॥ इंगाली[1] वण[2] साडी[3]-
भाडी[4] फोडी[5] सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव
दंत[1] लक्ख[2] रस[3] केस[4] विसविसयं[5] ॥२२॥ एवं खु जं-
तपिल्लणकम्मं १ निल्लंछणं २ च दवदाणं
३ ॥ सरदहतलायसोसं ४, असईपोसं ५
च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-
तणकट्ठे मंतमूलभेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविए वा,
पडिक्कमे० २४॥ ण्हाणुव्वट्टणवण्णगविलेवणे
सद्दरूवरसगंधे ॥ वत्थासणआभरणे, पडिक्क-
मे० ॥२५॥ कंदप्पे १ कुक्कुइए २, मोहरि ३
अहिगरण ४ भोगअइरित्ते ५ ॥ दंडंमि
अणट्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥२६
॥ तिविहे दुप्पणिहाणे ३, अणवट्ठाणे
४ तहा सइविहूणे ५ ॥ सामाइअ वित-
हकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥

आणवणे १ पेसवणे २, सद्दे ३ रूवे ४ अ पुग्गलक्खेवे ५ ॥ देसावगासिअंमी, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चार-विही, पमाय तह चेव भोयणाभोए ॥ पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे १, पिहिणे २ ववएस ३ मच्छरे ४ चेव ॥ कालाइक्कम-दाणे ५, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संज-एसु अणुकंपा ॥ रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, *जीविअमरणे अ आसंसपओगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥

* जीविअमरणेसु आससपओगे

मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआ-रस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्कागा—रवेसु सन्नाकसायदंमेसु॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो (तयं) अ तं निंदे ॥ ३६ ॥ सम्मद्दिठी जीवो,जइवि हु पावं समायरे किंचि ॥ अप्पो सि होइ बंधो,जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३५॥ तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेई, वाहिव्व सुसिक्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठगयं, मंतमूलविसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं ॥ ॥ आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कयपावोवि मणुस्सो[1], आलोइअ निंदिअ गुरुसगासे॥ होइ अइरेगलहुउ, उहरिअभरुव्व भारवहो॥ ४० ॥

---

१ मणूसो.

आवस्सएण एएण, सावर्ज जइवि बहुरज होइ ॥ दुक्खाणमंतकिरिअं,काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूलगुण-उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स ॥ अब्भु-ठिउमि आराहणाए, विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउ-वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥४४॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिरसंचिय-पावपणासणीइ भवसयसहस्समहणीए ॥ चउवीसजिणविणिग्गयकहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ॥ सम्म-दिठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडि-क्कमणं ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरू-

वणाए अ॥४८॥खामेमि सव्वजीवे,सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउ-व्वीसं ॥ ५० ॥ इति ॥ ३५ ॥

३६ ॥ अथ अब्भुट्ठिउसुत्तं ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !, अब्भु-ट्ठिउमि (अब्भुट्ठिउहं), अब्भिंतरदेव-सिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे, आलावे संलावे, उच्चासणे समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ३६ ॥

गुरु (१५) लघु (१११) सर्ववर्ण (१२६)

३७ ॥ अथ आयरिअ उवज्झाए सुत्तं ॥

आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल गणे अ ॥ जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण-संघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो ॥ सव्वं खमावइ-त्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥३॥३८॥

३९ ॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय॥

इच्छामो अणुसट्ठिं, नमो खमासमणा-णं, नमोऽर्हत्० ॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्म्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षा-य, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां वि-कचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं

दधत्या ॥ सद्दशौरितिसङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषाय-तापार्दितजन्तुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमु-खाम्बुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्नि-भो,दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम् ॥३ए॥

गाथा (३) पद (१२) गुरु (१ए) लघु (ए१) सर्व-वर्ण (११०)

४० ॥ अथ विशाललोचन ॥

विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दन्तांशुके-सरम् ॥ प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य, मुखपद्मं पु-नातु वः ॥ १ ॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेन्द्राः ॥ तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कलङ्कनिर्मुक्तममुक्त-पूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयम् ॥ अ-पूर्वचन्द्रं जिनचन्द्रभाषितं, दिनागमे नौ-

मि बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥ इति ॥ ४० ॥

४१ ॥ अथ श्रुतदेवताक्षेत्रदेवतास्तुती ॥

सुअ देवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीअकम्मसंघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुअसायरे भत्ती ॥ १ ॥

खित्तदेवयाए करेमि० ॥

जीसे खित्ते साहू, दंसणनाणेहिं चरणसहिएहिं ॥ साहंति मुक्कमग्गं, सा देवी हरउ डुरिआइं ॥ २ ॥ इति ॥ ४१ ॥

४२ ॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिम् ॥ १ ॥ इति ॥ ४२ ॥

४३ ॥ अथ भुवनदेवताक्षेत्रदेवतास्तुती ॥

भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं०

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसं-
यमरतानाम् ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं
सदा सर्वसाधूनाम् ॥ १ ॥ इति ॥

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः सा-
ध्यते क्रिया ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूया-
न्नः सुखदायिनी ॥ २ ॥ इति ॥ ४३ ॥

४४ ॥ अथ अड्ढाइज्जेसु मुनिवंदनसूत्रम् ॥

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पन्नरससु क-
म्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू, रयहरण-
गुछपडिग्गहधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अ-
ढारससहस्ससीलंगधारा ॥ [1]अक्खुयायारच-
रित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वं-
दामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४४ ॥

४५ ॥ अथ वरकनकसूत्रम् ॥

॥ वरकनकशङ्खविद्रुममरकतघनसन्नि-

---

१ अक्खयायार इति पाठांतरे.

त्नं विगतमोहम् ॥ सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं वन्दे ॥ १ ॥ इति ॥ ४५ ॥

४६ ॥ अथ लघुशान्तिस्तवः ॥

॥ शान्तिं शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ ॐमितिनिश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा–संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह –स्वामिकसंपूजिताय न[१] जिताय ॥ भुवनजनपालनोद्यततमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन-कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्टग्रहभूतपिशाच-शाकिनीनां प्रमथनाय॥

---

१ नि जिताय इति पाठांतरे.

॥५॥ यस्येति नाममन्त्र–प्रधानवाक्योपयो-
गकृततोषा॥ विजया कुरुते जनहित–मिति
च नुता नमत तं शान्तिम् ॥ ६ ॥ भवतु नम-
स्ते भगवति !,विजये !सुजये ! परापरैर जिते!
॥ अपराजिते ! जगत्यां, जयतीति जयावहे
भवति ! ॥७॥ सर्वस्यापि च सङ्घस्य, भद्रक-
ल्याणमङ्गलप्रददे॥साधूनां च सदा शिव-सु-
तुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृ-
तसिद्धे!, निर्वृतिनिर्वाणजननि ! सत्त्वानाम्
॥ अभयप्रदाननिरते !, नमोऽस्तु स्वस्ति-
प्रदे! तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शु-
भावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृष्टीनां
धृति-रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिन-
शासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति
जनतानां ॥ श्रीसंपत्कीर्तियशो–वर्द्धनि ! ज-
यदेवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल-
विषविषधर–दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः॥रा-

क्षसरिपुगणमारी-चौरेतिश्वापदादिभ्यः १२
अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च
कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं,
कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥
भगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति-तुष्टिपु-
ष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ॥ ॐमिति
नमो नमो ह्रॉं ह्रीं ह्रूं ह्रः ॥ यः क्षः
ह्रीं फुट् फुट्* स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्ना-
माक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी ॥ कुरुते
शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै
॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरिदर्शित-मन्त्रपदविद-
र्भितः स्तवः शान्तेः ॥ सलिलादिभयवि-
नाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥
यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा
यथायोगम् ॥ स हि शान्तिपदं यायात्

---

* फुट् फटः, फट् फट् स्वाहा इति पाठांतरे.

सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्ग्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति लघुशान्तिस्तवः॥४६॥

४७ ॥ अथ चउक्कसाय ॥

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमुसुमूरणू॥ सरसपिअंगुवण्णु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥१॥ जसु तणुकंतिकडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ ॥ नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ ॥ सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥ इति चउक्कसाय ॥ ४७ ॥

४८ ॥ अथ भरहेसरनी सज्झाय॥

भरहेसर बाहुबली, अभयकुमारो

१ लुद्धउ इति पाठांतरं.

अ ढंढणकुमारो ॥ सिरिअ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥ मेअज्ज थूलिभद्दो, वयररिसि नंदिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नो अ सुकोसल, पुंडरिअ केसि करकंडू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल महासाल सालिभद्दो अ ॥ भद्दो दसण्णभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥ पभवो विण्हुकुमारो अद्दकुमारो दढप्पहारी अ॥सिज्जंस कूरगडुअ, सिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिँ संजुत्ता ॥ जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलय जंति

॥ ७ ॥ सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ नमयासुंदरी सीया, नंदा नद्दा सुनद्दा य ॥ ८ ॥ रायमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरीदेवी ॥ जिठ सुजिठ मिगावइ, पनावई चिल्लणादेवी ॥ ए ॥ बंनी सुंदरी रुप्पिणि, रेवइ कुंती सिवा जयंती य ॥ देवइ दोवइ धारणी, कलावई पुप्फचूला य ॥ १० ॥ पउमावई य गोरी, गंधारी लख्कमणा सुसीमा य ॥ जंबूवइ सच्चनामा, रुप्पिणि कण्हठ महिसीउ ॥ ११ ॥ जख्का य जख्कदिन्ना, नूआ तह चेव नूअदिन्ना य ॥ सेणा वेणा रेणा, नयणीउ थूलिनद्दस्स ॥ १२ ॥ इच्चाइ महासइउ, जयंति अकलंकसीलकलिआउ ॥ अज्जवि वज्जइ जासिं, जसपडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सता सतीउनी सज्जाय ॥ ४८ ॥

४९ ॥ अथ मण्हजिणाणं सज्झाय ॥

॥[1]मण्ह जिणाणं आणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ॥ छव्विह आवस्सयंमि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ॥ सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥ जिणपूआ जिणथूणणं, गुरुथुअसाहम्मिआण वच्छल्लं ॥ ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥ उवसम विवेग संवर, भासासमिई [2]छजीवकरुणा य ॥ धम्मिअजणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे॥ सड्ढाण किच्चमेअं,निच्चं सुगुरूवएसेणं॥५॥इति ॥४९॥

५० ॥ अथ तीर्थवंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंदुं करजोड, जिनवर

१ मन्नह जिणाणमाणं. २ य जीव इति पाठांतरं.

नामे मंगल कोड ॥ पहेले स्वर्गे लाख ब-
त्रीश, जिनवर चैत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥
बीजे लाख अठाविश कह्यां, त्रीजे बार
लाख सद्द्यां ॥ चोथे स्वर्गे अड लख
धार, पांचमे वंडुं लाखज चार ॥ २ ॥
छठे स्वर्गे सहस पचास, सातमे चा-
लिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे छ
हजार, नव दशमे वंडुं शत चार ॥ ३ ॥
अग्यार बारमे त्रणशें सार, नव ग्रैवेके त्र-
णशें अढार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली,
लाख चोराशी अधिकां वली ॥ ४ ॥ स-
हस सत्ताणु त्रेविश सार, जिनवर भुवन
तणो अधिकार ॥ लांबां सो जोजन वि-
स्तार, पचास उंचां बोहोंतेर धार ॥ ५ ॥
एकसो एंशी बिंब परिमाण, सभासहित
एक चैत्ये जाण ॥ सो कोड बावन कोड संभा-
ल, लाख चोराणुं सहस चौंआल ॥ ६ ॥ सा-

तशें उपर साठ विशाल, सवि बिंब प्रणमुं त्रणकाल ॥ सात कोडने बोहोंतेर लाख ॥ भुवनपतिमां देवल भाख ॥७॥ एकसो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरशें कोम नेव्याशी कोड, साठ लाख वंदुं करजोड ॥ ८ ॥ बत्रीशें ने ओगणसाठ, तिर्यग्लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणु हजार, त्रणशें वीश ते बिंब जुहार ॥ ए ॥ व्यंतर ज्योतिषिमां वली जेह, शाश्वता जिन वंदु तेह ॥ ऋषभ चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामे गुणसेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदुं जिन वीश, अष्टापद वंदु चोवीश ॥ विमलाचल ने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार ॥ ११॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार ॥ अंतरीक वरकाणो पास, जीरावलोने थंभण पास॥१२॥गाम नगर पुर पा-

टण जह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥
विहरमान वंडुं जिन वीश, सिद्ध अनंत
नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे
अणगार, अढार सहस सिलांगना धार ॥
पंच महाव्रत समिती सार, पाले पलावे
पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अभ्यन्तर तप
उजमाल, ते मुनि वंडुं गुणमणिमाल ॥
नित नित उठी कीर्त्ति करूं, जीव कहे
भवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ ५० ॥

५१ ॥ अथ सकलार्हत् ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठानमधिष्ठानं शिव-
श्रियः ॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयीशानमार्हन्त्यं प्र-
णिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यभावैः,
पुनतस्त्रिजगज्जनम् ॥ क्षेत्रे काले च सर्व-
स्मिन्नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥ आदिमं
पृथिवीनाथमादिमं निष्परिग्रहं ॥ आदिमं
तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुमः॥ ३ ॥

अर्हंतमजितं विश्वकमलाकरभास्करम् ॥
अम्लानकेवलादर्शसंक्रान्तजगतं स्तुवे॥४॥
विश्वभव्यजनारामकुल्यातुल्या जयन्ति ताः
॥ देशनासमये वाचः, श्रीसंभवजगत्पतेः ॥
५ ॥ अनेकान्तमताम्भोधिसमुल्लासनच-
न्द्रमाः ॥ दद्यादमन्दमानन्दं, भगवानभिन-
न्दनः ॥ ६ ॥ द्युसत्किरीटशाणाग्रोत्तेजिता-
ङ्घ्रिनखावलिः ॥ भगवान् सुमतिस्वामी, त-
नोत्वभिमतानि वः ॥ ७ ॥ पद्मप्रभप्रभोर्दे-
हभासः पुष्णन्तु वः श्रियम्॥ अन्तरङ्गारि-
मथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥ श्रीसु-
पार्श्वजिनेन्द्राय, महेन्द्रमहिताङ्घ्रये ॥ नम-
श्चतुर्वर्णसङ्घगगनाभोगभास्वते ॥ ९ ॥
चन्द्रप्रभप्रभोश्चन्द्रमरीचिनिचयोज्ज्वला ॥
मूर्त्तिर्मूर्त्तसितध्याननिर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥
१० ॥ करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवल-
श्रिया ॥ अचिन्त्यमाहात्म्यनिधिः, सुविधि-

बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥ सत्त्वानां परमानन्दकन्दोद्भेदनवाम्बुदः ॥ स्याद्वादामृतनिस्यन्दी, शीतलः पातु वो जिनः ॥१२॥ भवरोगार्त्तजन्तूनामगदङ्कारदर्शनः ॥ निःश्रेयसश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीभूततीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥ विमलस्वामिनो वाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयन्ति त्रिजगच्चेतोजलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयम्भूरमणस्पर्द्धिकरुणारसवारिणा ॥ अनन्तजिदनन्तां वः, प्रयच्छतु सुखश्रियम् ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माणमिष्टप्राप्तौ शरीरिणाम् ॥ चतुर्द्धा धर्म्मदेष्टारं, धर्म्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥ सुधासोदरवाग्ज्योत्स्नानिर्म्मलीकृतदिङ्मुखः ॥ मृगलक्ष्मा तमःशान्त्यै, शान्तिनाथजिनोऽस्तु वः ॥ १८ ॥ श्री-

कुन्थुनाथो भगवान्, सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः ॥ सुरासुरनृनाथानामेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तु भगवाँश्चतुर्थारनभोरविः ॥ चतुर्थपुरुषार्थश्रीविलासं वितनोतु वः ॥ २० ॥ सुरासुरनराधीशमयूरनववारिदम् ॥ कर्म्मद्रून्मूलने हस्तिमल्लं मल्लीमभिष्टुमः ॥ २१ ॥ जगन्महामोहनिद्राप्रत्यूषसमयोपमम् ॥ मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥ २२ ॥ लुठन्तो नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणम् ॥ वारिप्लवा इव नमेः, पान्तु पादनखांशवः ॥ २३ ॥ यदुवंशसमुद्रेन्दुः, कर्म्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥ कमठे धरणेन्द्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥ २५ ॥ श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानन्दस-

रोराजमरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥ कृता-
पराधेऽपि जने, कृपामन्थरतारयोः ॥ ईष-
द्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥२७॥
जयति विजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसे-
वितः श्रीमान् ॥ विमलस्त्रासविरहितस्त्रि-
भुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ २८ ॥ वीरः
सर्वसुरासुरेन्द्रमहितो वीरं बुधाः संश्रिता,
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय नित्यं
नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य
घोरं तपो, वीरे श्रीधृतिकीर्तिकान्तिनिचयः
श्रीवीर भद्रं दिश ॥२९॥ अवनितलगताना-
म्, कृत्रिमाकृत्रिमानां; वरभवनगतानां,
दिव्यवैमानिकानाम् ॥ इह मनुजकृतानां,
देवराजार्चितानां; जिनवरभवनानां, भाव-
तोऽहं नमामि ॥ ३० ॥ सर्वेषां वेधसामा-
द्यमादिमं परमेष्ठिनाम् ॥ देवाधिदेवं सर्वज्ञं

१ त्रिलोकचूडामणि,

श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ ३१ ॥ देवोऽनेकभव-
वार्जितोर्जितमहापापप्रदीपानलो, देवः सि-
द्धिवधूविशालहृदयालङ्कारहारोपमः ॥
देवोऽष्टादशदोषसिन्धुरघटानिर्भेदपञ्चान-
नो, भव्यानां विदधातु वाञ्छितफलं श्री-
वीतरागो जिनः ॥ ३२ ॥ ख्यातोऽष्टापद-
पर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः, श्रीमान्
रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः ॥
वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकू-
टादयस्तत्र श्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्व-
न्तु वो मङ्गलम् ॥ ३३ ॥ इति ॥ ५१ ॥

॥ अथ श्रीपाक्षिकादि संक्षेपअतिचार ॥

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि
तह य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ
एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥

ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार,
तप आचार, वीर्याचार ए पंचविध आचार-

मांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांहे सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुओ होय ते सवि हुं मन वचन कायाए करी मिछामि डुक्कडं. ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार ॥ काले विणए बहुमाणे उवहाणे तह य निण्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान कालवेलाए भण्यो गुण्यो. विनयहीन, बहुमानहीन, योगउपधानहीन, अनेरा कन्हे भणी अनेरो गुरु कह्यो; देववंदन वांदणे पडिक्कमणे सज्झायकरतां भणतां गुणतां कूडो अक्षर कान्हामात्रे आगलो ओछो भण्यो; सूत्र अर्थ बिहुं कूडां कह्यां; साधु तणे धर्मे काजो डांडो अणपडिलेह्यां काजो उद्धरिउं; असज्झाइ, अणोजामांहि दशवैकालिकप्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो;

श्रावक तणे धर्मे थिविरावलि, पडिक्कमणा-
सूत्र, उपदेशमाला प्रमुख, कालवेला का-
जो अणउद्धरिए पढियो; ज्ञानद्रव्य, भ-
क्षित उपेक्षित प्रज्ञापराध विणास्यो[1]; विण-
सतां उवेख्यो[2]; सार संभाल न कीधी;
तथा ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी,
कवली, नोकारवाली, सांपडा, सांपडी, दस्त-
री, वही[3], उलियाँ प्रत्ये पग लाग्यो; थुंक लाग्यां
थुंके करी अक्षर मांज्यो; कन्हे छतां आ-
हार नीहार कीधो; ज्ञानवंत प्रत्ये द्वेष, म-
त्सर, अंतराय, अवज्ञा कीधी; आपणा
जाणवा तणो गर्व चिंतव्यो; ज्ञानाचार-
व्रतविषइउ अनेरो जे कोइ० पक्ष० ॥१॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्सं-
किय निक्कंखिय, निव्वितिगिछा अमूढदिठी

---

१ नाश कर्यो. २ उपेक्षा करी ३ चोपडो.
४ लखेला कागळना वींटा.

अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वह्वल्ल पन्नावणे अठ ॥ ३ ॥

देवगुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं, तथा एकांतनिश्चय न कीधो; धर्मसंबंधीया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहिं; तपोधन तपोधनी प्रत्ये मलमलिनगात्र देखी डुगंछा कीधी; मिथ्यात्वितणी पूजा प्रन्नावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं तथा संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा कीधी; अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति अन्नक्ति कीधी; तथा देवडव्य, गुरुडव्य साधारण डव्य, न्नक्षित उपेक्षित, प्रज्ञापराध विणास्यो, विणसतो उवेख्यो; उती शक्तें सार संन्नाल न कीधी; तथा साधर्मिकशुं कलह कर्मबंध कीधो; अधोती अष्टपट मुखकोश पाखे देवपूजा कीधी; वासकूंपी, धूपधाणुं, कलश तणो ठबको लाग्यो;

देहरा पोसालमांहि मल श्लेष्म लुह्यां;हास्य केली कुतुहल कीधां; जिनभवने चोराशी आशातना , गुरुप्रत्ये तेत्रीश आशातना, ठवणायरीय हाथ थकी पाड्युं; पडिलेहवुं विसार्युं; गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहि; दर्शनाचारव्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ २ ॥

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिँ समिईहिँ तीहिँ गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठ्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥

ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आदानभंडमत्तनिख्केवणासमिति, पारिठ्ठावणिया समिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए अष्ट प्रवचनमाता साधुतणे धर्मे सदैव, श्रावकतणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे, रुडी पेरे पाळ्यां नहि,

खंडणा विराधना हुइ, चारित्राचारव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार. पक्ष० ३

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे सम्यक्त्वमूल बारव्रत, सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संका कंख विगिछा० ॥ शंका–श्री अरिहंततणां बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयानां चारित्र, जिनवचनतणो संदेह कीधो; आकांक्षा—ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, देवदेहरानो प्रभाव देखी रोग आवे इहलोकपरलोकार्थे पूज्या, मान्या; बौद्ध, सांख्य, संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगीया, जोगी, दरवेश, अनेरा दर्शनीयानुं कष्ट मंत्र चमत्कार देखी परमार्थ जाण्या विना भूलाव्या,मोह्या;कुशास्त्र शीख्यां,सांभळ्यां;श्राद्ध,संवत्सरी,होली,

बलेव, माहीपूनम, अजापडवो, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विनायकचोथ, नागपांचम, ऊीलणाबही, शीयलसप्तमी, ध्रुवअष्टमी, नौलीनवमी, अहवादशमी, व्रतअग्यारसी, वत्सबारसी, धनतेरसी, अनंतचौदशी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायन, नैवेद्य, याग, जोग मान्या; पीपले पाणी रेड्यां, रेडाव्यां; घरबाहिर कूवे, तलावे, नदी, डह, कुंड, वावि समुडे, पुण्यहेतु स्नान कीधां; वितिगिछा—धर्म संबंधीया फल तणो संदेह कीधो; जिन अरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुणजणी पूज्या नहिं; इहलोकपरलोक संबंधीया जोग वंछित पूजा कीधी; रोग आतंक कष्ट आवे खीणवचन याग मान्या; महात्मानां जात, पाणी मल शोजा तणी निंदा कीधी; प्रीति

मांडी; तेहनी दाक्षिण्य लगे तेहनो धर्म मान्यो, श्री सम्यक्त्वव्रतविषइयो अनेरो० ॥ ४ ॥

पहेले स्थूलप्राणातिपातविरमण व्रते पांच अतिचार. वहबंधछविछेए० ॥ द्विपद चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे गाढो घाव घाल्यो, गाढ बंधण बांध्युं, घणे भारे पीड्यो, निर्लंछण कर्म कीधुं, चारा पाणी तणी वेलाए सार संभाल न कीधी. लेहणे देणे कुणहने ओढव्युं, लंघाव्युं. तेणे भूख्ये आपण जिम्या. सव्यां धान्य रुडीपेरे जोयां नहि. पाणी गलतां ढोळ्युं, जीवाणी सूकव्युं, गळतां झालक नांखी, गळणुं रुडुं न कीधुं. इंधण छाणां अणशोध्यां बाल्यां; ते मांहि साप, खजुरा, विंछी, सरोला, जूवा, गिंगोडा, साहतां मूआ, डुहव्या, रुडे स्थानके न मूक्या; कीडी, मंकोडी, उदेही, घीमेल

कातरा, चूडेल, पतंगीया,देडकां,अलसीयां, इयल प्रमुख जे कोइ जीव विणठा;विणसतां उवेख्या, चांप्यां; डुहव्या. हलावतां चला-वतां पाणी छांटतां अनेराइ कामकाज क-रतां निर्ध्वंसपणुं कीधुं,जीवरक्षा रुडी न की-धी.पहेले स्थूल प्राणातिपात व्रत विषइउ०.

बीजे स्थूलमृषावादविरमण व्रते पांच अतिचार. सहसा रहस्स दार० ॥ सहसा-त्कारे कुणह प्रत्ये अयुक्त आल दीधुं. स्वदारा मंत्र भेद कीधो. अनेराइ कुणहनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो. कुणहने अ-पाय पाडवा कूडी बुद्धि धरी. कूडो लेख लख्यो. जूठी साख भरी. थापणमोसो की-धो. कन्या,ढोर,भूमि संबंधीया लेहणे देहणे वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या. बीजे स्थूल मृषावाद व्रत विषइयो अनेरो०

त्रीजे स्थूलअदत्तादानविरमणव्रते पांच

अतिचार. तेनाहडप्पउंगे० घर बाहार, क्षेत्र, खले, परायुं अणमोकल्युं लीधुं, वावर्युं; चोराई वस्तु लीधी; चोर प्रत्ये संबल दीधुं; विरुद्ध राज्यादि कर्म कीधुं; कूडां मान, मापां कीधां; माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र वंची कुणहने दीधुं; जूदी गांठ कीधी; नवा जूना, सरस नीरस, वस्तुतणा जेलसंजेल कीधां. त्रीजे अदत्तादान व्रत विषइयो अनेरो० ॥ ३ ॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमनविरमण व्रते पांच अतिचार. अपरिग्गहिया ईतर० ॥ अपरिग्रहिता गमन कीधुं; अनंग क्रीडा कीधी; विवाहकरण कीधुं; काम जोग तणे विषे अति अभिलाष कीधो; दृष्टि विपर्यास कीधो; आठम चउदशी तणा नियम लेइ जांग्या; अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरे हुआ.

चोथे मैथुन विरमण व्रत विषइयो अनेरो० ८

पांचमे स्थूलपरिग्रहपरिमाण व्रते पांच अतिचार. धण धन्न खित्त वथ्थू० ॥ धण धन्न विगेरे परिमाण उपरुं रखाव्युं, सोनुं रुपुं, नवविध परिग्रह प्रमाण लीधुं नहि, पढतुं विसार्युं, पांचमे परिग्रह परिमाण व्रत विषइयो अनेरो० ॥ ए ॥

छठे दिग्विरमण व्रते पांच अतिचार. गमणस्स य परिमाणे० ॥ उर्ध्व दिशे, अहोदिशे, तिर्यग् दिशे जावा आववातणा नियम लेइ भांग्या; एक दिशी संक्षेपी बीजीदिशि वधारी; विस्मृति लगे अधिक भमि गया, पाठवणी आघी पाछी मोकली; वहाण व्यवसाय कीधो; वर्षाकाले गामतरुं कीधुं. छठे दिग्विरमण व्रत विषइयो अनेरो० ॥ १० ॥

सातमे भोगोपभोग व्रते पांच अति-

चार. सच्चित्ते पडिबद्धे० ॥सचित्त आहारे, सचित्तप्रतिबद्ध आहारे, अप्पोलसहि नरकणया, डुप्पोलसहि नरकणया, अपक्व आहारे, डुपक्व आहारे, तुगौषधि, कुली आंबली, ओला, उंबी, पहुंक, पापडीतणां नक्षण कीधां; अनंतकाय, अथाणां तणां नक्षण कीधां; तथा रिंगण, विंगण पीलू , पीचू , पंपोटा, महुडां, वरुबोर, प्रमूख बहु-बीज तणां नक्षण कीधां. ॥ गाथा ॥ सचि-त्त दव्व विगई,वाणह तंबोल वथ्थ कुसुमेसु; वाहण सयण विलेवण, बंनदिसी नाण नत्तेसु. ॥ १ ॥ ए चौद नियम दिन प्रत्ये लीधा नहि, लेइ ने संक्षेप्या नहि; सचित्त, डव्य, विगय, खासडा, वाहन, तंबोल, फो-फल, बेसण, सयन, पाणी अंघोलण, फल, फूल, नोजन, आगहने जे कोई नियम लेइ नांग्या; बावीश अननक्ष्य, बत्रीश अनंत-

कायमांहि आदू, मूला, गाजर, पिंड, पिंडालू, कचूरो, सूरण, खिलोडां, मोरडा, सेलरां, कुली आंबली, वाघरडां, गरमर, नीली गलो, वाल्होल खाधी; वाशी कठोल, पोली, रोटली, त्रण दिवसना उंदन, मधु, महुडां, विष, हीम, करहा, घोलवडां, अजाण्यां फल, टींबरु, गुदां, बोर, अथाणु, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिबडां खाधां; लगजग वेलाए वालु कीधां; दिन उग्याविण शिराव्या; जे कोइ अनेरो अतिचार हुउं होय; तथा कर्मतः-इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, जाडीकम्मे, फोडीकम्मे ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिज्य, लक्कवाणिज्य, रसवाणिज्य, केशवाणिज्य, विषवाणिज्य, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असइपोसणया, ए पांच सा-

मान्य ॥ ए पन्नर कर्मादान मांहे जे कोइ कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, अनेरा जे कांइ सावद्य कर्म समाचर्यां होय, सातमे भोगोपभोग व्रत विषइयो अनेरो० ॥ ११ ॥

आठमे अनर्थदंडविरमणव्रते पांच अतिचार. कंदप्पे कुक्कुइए ॥ अनर्थदंड जे कहिये काम काज पाखे मुधा पाप लाग्यां; मुख हास्य खेल, कुतूहल, अंग कुचेष्टा कीधी; निरर्थक लोकने कर्षण, गाभां वाही गामांतरे कमावानी बुद्धि दीधी; कण कुवस्तु ढोर लेवराव्यां; अनेराइ पापोपदेश दीधां; कोश, कूहाडा, रथ, उखल, मुशल, घर, घंटी प्रमुख सज्ज करी म्हेल्यां; माग्यां आप्यां; अंघोल, नाहणे, पग धोयणे, खाले पाणी ढोल्यां, अथवा झीलणा झील्यां; जूवटुं रम्यां; नाटक पेखणां जोयां; पुरुष स्त्रीनां रुप शृंगार वखाण्यां; राज-

कथा, देश कथा, भक्त कथा, स्त्री कथा, पराइ तांत कीधी; कर्कश वचन बोल्या; संभेडा लगाड्या; सरभ, कूकडा प्रमुख जूझतां जोयां, कलह करता जोयां; लोक तणी उपार्जना कीधी; सुख कीर्ति देश लइ-चिंतवी; लूण, पाणी, माटी, कण, कपाशिया, काजविण चांप्या, ते उपर बेठा; आली वनस्पति चूंटी, अंगीठा काष्ट वणिज कीधा; ठाश, पाणी, घी, तेल, गोळ, अम्लवेतस, बेरंजातणां भाजन उघाडां मेहल्यां; ते मांहि कीडी, मंकोडी, कुंथुआ, उन्देही, घीमेल, गिरोली प्रमुख जे कोइ जीव विणठा; सुडा, सालही, क्रीडा हेतु पांजरे घाल्या; अनेराइ जीवने रागद्वेष लगे एकने ऋद्धि परिवार वंछी, एकने मृत्यु हाणी वंछी. आठमे अनर्थदंडविरमण व्रत विषइओ अ० ॥ १२ ॥

नवमे सामायिक व्रते पांच अतिचार. तिविहे डुप्पणिहाणे० ॥ सामायिकमांहि मनमां आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं. वचन सावद्य बोल्यां. शरीर अणपडिलेह्युं ह-लाव्युं. छती शक्तिए सामायिक लीधुं नहि. उघाडे मुखे बोल्यां, सामायिक मांहि उंघ आवी, वीज दीवा तणी उजेही लागी; विकथा कीधी; कण, कपाशिया, माटी, पाणीतणा संघट्ट हुआ; मुहपत्ति संघट्टी; सामायिक अणपूगे पार्युं, पारवुं विसार्युं. नवमे सामायिक व्रत विषइओ अनेरो जे कोइ अतिचार० ॥ १३ ॥

दशमे देशावगाशिक व्रते पांच अति-चार. आणवणे पेसवणे० ॥ आणवण-प्पयोगे, पेसवणप्पयोगे, सद्दाणुवाइ, रू-वाणुवाइ,बहियापुग्गल पक्खेवे. निमी भूमि-कामांहि बाहिरथी अणाव्युं. आपण कन्हेथी

बाहिर मोकल्युं. शब्द संन्नलावी, रूप दे-खाडी, कांकरो नांखी आपणपणुं छतुं जणाव्युं, पुद्गलतणो प्रक्षेप कीधो. दशमे देशावगाशिक व्रत विषइओ अनेरो० १४

अग्यारमे पोषधोपवास व्रते पांच अ-तिचार. संथारुच्चारविहि० ॥ पोसहलीधे संथारातणी भूमि बाहिरलां थंमिलां सं-दिसे रुडां शोध्यां नहि, पडिलेह्यां नहि, थंमिल मात्रू परठवतां चिंतवणी न कीधी; "अणुजाणह जस्सुग्गहो" न कह्यो, पर-ठव्या पुंठे वार त्रण वोसिरे वोसिरे न कह्यो. देहरा पोसालमांहे पेसतां निसरतां निसीहि आवस्सहि कहेवी विसारी. पु-ढवी, अप, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव कीधा; सं-थारा पोरिसी तणो विधि भणवो विसार्यो, अविधिए संथार्या; पारणादिकतणी चिंता

निपजावी. कालवेलाए देव न वांद्या; पोसह असुरो लीधो, सवेरो पार्यो, पर्वतिथे पोसह लीधो नहि. अग्यारमे पोषधोपवास व्रत विषइयो अनेरो० ॥ १५ ॥

बारमे अतिथिसंविभाग व्रते पांच अतिचार. सच्चित्ते निक्खिवणे० ॥ सच्चित वस्तु हेठ उपर छतां असुझतुं दान दीधुं; वहोरवा वेलाए टली रह्या; मत्सर लगे दान दीधुं; देवातणी बुद्धे पराइ वस्तु धणीने अणकहे दीधी; अथवा आपणी करी दीधी; अणदेवातणी बुद्धे सुझतुं फेरी असुझतुं कीधुं; गुणवंत आवे भक्ति न साचवी; अनेराइ धर्मक्षेत्र सीदातां छती शक्ते उद्धर्यां नहि, दीन क्षीण प्रत्ये अनुकंपादान दीधुं नहि, देतां वार्युं; बारमे अतिथिसंविभाग व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १६ ॥

संलेषणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे,जीविआसंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे, कामभोगासंसप्पओगे, इहलोके धर्मतणा प्रभावलगे राजऋद्धि भोग वांछ्या; परलोके देव, देवेंद्र, चक्रवर्तितणी पदवी वांछी; सुख आवे जीववातणी वांछा कीधी, दुःख आवे मरवातणी वांछा कीधी; काम भोग तणी वांछा कीधी, संलेषणाव्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १७ ॥

तपाचार बार भेद ॥ ६ बाह्य ६ अभ्यंतर अणसणमूणोअरिया० ॥ अणसण भणी उपवासादिक पर्वतिथे तप न कीधुं; उणोदरी बे चार कवल ऊणा न रह्या; द्रव्यभणी सर्व वस्तु तणो संक्षेप न कीधो; रस त्याग न कीधो; कायक्लेश

लोचादिक कष्ट कर्यां नहि; संलीनता अंगोपांग संकोची राख्यां नहि; पच्चक्खाण भांग्या. पाटलो डगतो फेड्यो नहि; गंठसहि पच्चक्खाण भांग्युं; उपवास, आंबिल, नीवी कीधे मुखे सचित्त पाणी घाल्युं, वमन हुओ. बाह्यतप विषइओ अनेरो० ॥ १८ ॥

अभ्यंतर तप ॥ पायछित्तं विणओ०॥ सुधुं प्रायश्चित्त पडिवज्युं नहि, आलोयण तणी सुधी टीप कीधी नहि; सुधो तप पहुंचाड्यो नहि; साते भेदे विनय साचव्यो नहि; दश भेदे वैयावच्च न कीधो, पंचविध सज्झाय न कीधो; कषाय वोसराव्यो नहि; दुःखक्षय कर्मक्षय निमित्त काउसग्ग न कीधो; शुक्लध्यान, धर्मध्यान ध्यायां नहि; आर्त्त तथा रौद्र ध्यान

ध्यायां. अभ्यंतर तप विषइओ अ-
नेरो० ॥ १ए ॥

वीर्याचार त्रण अतिचार. अणिगूहिय-
बलविरियो० ॥ मनोवीर्य—धर्मध्यान तणे
विषे उद्यम न कीधो, पडिक्कमणे देवपूजा,
धर्मानुष्ठान, दान, शील, तप, नावना,
बती शक्तिए गोपवी, आलसे उद्यम
न कीधो, बेठां पडिक्कमणुं कीधुं, रुडां
खमासण न दीधां, वीर्याचार विषइओ
अनेरो० ॥ २० ॥

पडिसिद्धाणं करणे० ॥ प्रतिषेध—अ-
नक्ष्य, अनंतकाय, महारंन परिग्रह, जे
कोइ प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान,
मैथुन, परिग्रह,क्रोध,मान, माया, लोन,राग,
द्वेष, कलह, अन्याख्यान, पैशुन्य, रति
अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्या-
त्वशल्य, ए अढार पापस्थानक मांहे कीधां,

कराव्यां, अनुमोद्यां होय, ते सवि हुं मने, वचने, कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ २१ ॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे सम्यक्त्व मूल बार व्रत एकसो चोवीश अतिचार, पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर जाणतां, अजाणतां हुवो होय, ते सवि हुं मनवचनकायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ २२ ॥

इति पाक्षिकादि संक्षिप्त अतिचार.

॥ अथ श्री पाक्षिकादि अतिचार ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इय एसो पंचहा भणिउ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार ॥ ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुउ होय, ते सवि

हुं मने, वचने, कायाए करी तस्स मिच्छा-मि दुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारे आठ अतिचार ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह य निन्ह-वणे ॥ वंजण अत्थ तदुभए, अठविहो ना-णमायारो ॥ १ ॥ ज्ञान काल वेलाए न-ण्यो गुण्यो नहीं, अकाले भण्यो. विनय-हीन, बहुमानहीन, योग उपधान हीन, अनेराकन्हे भणी अनेरो गुरु कह्यो. देव गुरु वांदणे, पडिक्कमणे, सज्झाय करतां, भ-णतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्राये अधिको ओछो भण्यो. सूत्र कूडुं कह्युं. अर्थ कूडो कह्यो. तदुभय कुडां कह्यां. भणीने विसार्यां. साधुतणे धर्म काजे काजो अण-उध्र्यें, डांडो अणपडिलेहे, वसति अण-शोधे, अणपवेसे, असझाइ, अणोझाय-मांहे श्री दशवैकालिकप्रमुख सिध्धांत भ-

ण्यो गुण्यो. श्रावकतणे धर्में थविरावलि, पडिक्कमणां, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत जण्यो गुण्यो. कालवेला काजो अणउद्धर्ये पढ्यो. ज्ञानोपगरण, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकारवाली, सांपडा, सांपडी, द-स्तरी, वही, उलिया प्रमुख प्रत्ये पग ला-ग्यो, थूंक लाग्युं, थूंके करी अक्षर मांज्यो, उशीसे धर्यो; कने छतां आहार नीहार कीधो. ज्ञानद्रव्य जक्षतां उपेक्षा कीधी. प्रज्ञापराधे विणाश्यो, विणसतो उवेख्यो, छती शक्तिए सार संजाल न कीधी. ज्ञा-नवंत प्रत्ये द्वेष, मत्सर चिंतव्यो. अ-वज्ञा आशातना कीधी. कोइप्रत्ये जणतां, गणतां अंतराय कीधो. आपणा जाण-पणातणो गर्व चिंतव्यो. मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवल-ज्ञान, ए पंचविध ज्ञानतणी असद्दहणा

कीधी. कोइ तोतडो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो, अन्यथा प्ररूपणाकीधी ॥ ज्ञानाचारव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ १ ॥

दर्शनाचारे आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिछा अमूढदिठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वछ्ल्ल पभावणे अठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्मतणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं तथा एकांत निश्चय न कीधो. धर्म संबंधीया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नहीं. साधुसाध्वीनां मल मलिन गात्र देखी दुगंछा निपजावी. कुचारित्रीया देखी चारित्रीया उपर अभाव हुउ. मिथ्यात्वीतणी पूजाप्रभावना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं. तथा संघमांहे गुणवंततणी अनुपबृंहणा कीधी. अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अ-

भक्ति निपजावी, अबहुमान कीधुं. तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य, भक्षित उपेक्षित प्रज्ञापराधे विणाश्या, विणासता उवेख्या, छती शक्तिए सार संभाल न कीधी. तथा साधर्मिकसाथे कलह कर्मबंध कीधो. अधोती, अष्टपड मुखकोश पाखे देवपूजा कीधी. बिंबप्रत्ये वासकूंपी, धूपधाणुं, कलशतणो ठबको लाग्यो. बिंब हाथथकी पाड्युं. उसास निःसास लाग्यो. देहरे, उपाश्रये मलश्लेष्मादिक लोह्युं. देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार नीहार कीधां; पान, सोपारी, निवेदीआं खाधां. ठवणायरिय[१] हाथथकी पाड्या, पडिलेहवा विसार्या. जिनभवने चोराशी आशातना, गुरु गुरुणी प्रत्ये तेत्रीश आशातना कीधी होय, गु-

१ स्थापनाचार्य.

रुवचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहीं ॥ दर्शनाचारव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ २ ॥

चारित्राचारे आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिँ समिईहिँ तीहिँ गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ १ ॥ ईर्या समिति ते अणजोए हिंड्या. भाषा समिति ते सावद्य वचन बोल्या. एषणा समिति ते तृण[1], डगल[2], अन्न पाणी असूझतुं लीधुं. आदानभंडमत्तनिखेवणा समिति ते आसन, शयन, उपकरण मातरुं प्रमुख अणपुंजी जीवाकुल भूमिकाये मूक्युं लीधुं. पारिष्ठापनिका समिति ते मलमूत्रश्लेष्मादिक अणपुंजी जीवाकुल भूमिकाये परठव्युं. मनोगुप्ति, मनमां आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां.

---

१ घास. २ अचित माटीना ढेफां.

वचनगुप्ति, सावद्य वचन बोल्यां. कायगुप्ति, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं; अणपुंजे बेठा. ए अष्टप्रवचन माता (ते, सदैव साधुतणे धर्मे अने) श्रावकतणे धर्मे सामायिक पोसह लीधे, रूडीपेरे पाल्यां नहीं, खंडणा विराधना हुइ ॥ चारित्राचार व्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस मांही सूक्ष्मबादर जाणतां अजाणतां हुउं होय, ते सवि हुं मने वचने कायाए करी तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे श्री सम्यक्त्वमूल बारव्रत, सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संकाकंखविगिच्छा० ॥ शंका—श्रीअरिहंततणा बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयानां चारित्र, श्रीजिनवचन तणो सं-

देह कीधो॥ आकांक्षा—ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमंत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, नगरी, जूजूआ देव, देहेरांना प्रभाव देखी रोग आतंक कष्ट आव्ये इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या. सिद्ध विनायक[1] जीराऊलाने मान्युं, इच्छुं, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी, भरडा, भगत, लिंगिया, जोगीया, जोगी, दरवेश, अनेरा दर्शनीयातणो कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी परमार्थ जाण्या विना भूलाव्या, मोह्या. कुशास्त्र शीख्यां, सांभल्यां. श्राद्ध, संवच्छरी, होलि, बलेव, माहिपूनम, अजापडवो, प्रेतबीज, गौरीत्रीज, विनायक चोथ, नागपांचमी, झिलणाछठी, शीलसातमी, ध्रु-

१ गणेश.

वछआठमी, नौली नौमी, अहवा दशमी, व्रतअग्यारशी, वछबारशी, धनतेरशी, अनंतचउदशी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य कीधां.नवोदक, याग, नोग, उतारणां कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां. पीपले पाणी घाल्यां, घलाव्यां. घर बाहिर क्षेत्र, खले, कूवे, तलावे, नदीए, द्रहे, वाविए, समुद्रे, कुंडे, पुण्यहेतु स्नान कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां. दानदीधां. ग्रहण, शनिश्चर, माहामासे, नवरात्री, न्हायां. अजाणना थाप्यां, अनेराइ व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां ॥ वितिगिच्छा—धर्मसंबंधीआफलतणे विषे संदेह कीधो. जिन अरिहंत धर्मना आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुणत्रणी न मान्या, न पूज्या. महासती, महात्मानी इहलोक परलोक संबंधीया नोग वांछित

पूजा कीधी. रोग आतंक कष्ट आव्ये खीण वचन भोग मान्या. महात्माना भात, पाणी, मल शोभातणी निंदा कीधी. कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर कुभाव हुउं. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मांडी, दाक्षिण्य लगे तेहनो धर्म मान्यो, कीधो ॥ श्री सम्यक्त्वव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमांहि० ॥ १ ॥

पहेले स्थूलप्राणातिपातविरमणव्रते पांच अतिचार ॥ वहबंधछविछेए० ॥ द्विपद चतुष्पद प्रत्ये रीसवशे गाढो घाव घाल्यो, गाढे बंधने बांध्यो. अधिक भार घाल्यो. निर्लांछन कर्म कीधां. चारापाणीतणी वेलाए सारसंभाल न कीधी. लेहेणे देहेणे किणहिप्रत्ये लंघाव्यो, तेणे भूखे आपणे जम्या. कन्हे रही मराव्यो. बंधी-

खाने घलाव्यो. सल्यां धान्य तावडे नांख्यां, दलाव्यां, भरडाव्यां, शोधी न वावर्यां. इंधण, छाणां, अणशोध्यां बाळ्यां. तेमांहि साप, विंछी, खजूरा, सरवला, मांकड, जूआ, गिंगोडा, साहतां मुआ; उद्दव्या, रुडेस्थानके न मुक्या. कीडि मकोडिनां इंडां विछोह्यां. लीख फोडि, उदेही, कीडी, मकोडि, घीमेल, कातरा चूडेल, पतंगिया, देडकां, अलसीयां, इअल, कुंतां, डांस, मसा, बगतरा, माखी, तीड प्रमुख जीव विणाठा. माला हलावतां हलावतां पंखी, चडकलां, कागतणां इंडां फोड्यां. अनेरा एकेंद्रियादिक जीव विणास्या, चांप्या, उद्दव्या. कांइ हलावतां, चलावतां, पाणी छांटतां अनेरा कांइ कामकाज करतां, निध्वसंपणुं कीधुं. जीवरक्षा रूडी न कीधी.

---

१ झालतां--पकरूतां.

संखारो सूकाव्यो. रूडुं गलणुं न कीधुं. अणगलपाणी वावर्युं. रूडीजयणा न कीधी. अणगल पाणीए झील्यां. लुगडां धोयां. खाटला तावडे[2] नाख्या, झाटक्या. जीवाकुल भूमि लींपी. वाशीगार राखी. दलणे, खांडणे, लींपणे, रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या. धूणी करावी ॥ पहेले स्थूलप्राणातिपात-विरमणव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १ ॥

बीजे स्थूलमृषावादविरमणव्रते पांच अ-तिचार ॥ सहसारहस्सदारे० ॥ सहसातकारे कुणह प्रत्ये अजुगतुं आळ अभ्याख्यान दीधुं. स्वदारा मंत्र भेद कीधो. अनेरा कु-णहनो मंत्र, आलोच मर्म प्रकाश्यो. कु-णहने अनर्थ पाडवा कूडी बुद्धि दीधी.

---

१ न्हाया. २ तडके.

कूडो लेख लख्यो. कूडी साख नरी.थापण मोसो कीधो. कन्या, गौ, ढोर, नूमिसंबंधि लेहणे देणे व्यवसाये वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या. हाथ पगतणी गाली दीधी. कडकडा मोड्या. मर्म वचन बोल्या ॥ बीजे स्थूलमृषावादविरमणव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥२॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादानविरमणव्रते पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पउंगे० ॥ घर बाहिर खेत्र, खळे, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी, वावरी. चोराइ वस्तु वोहोरी. चोर धाड प्रत्ये संकेत कीधो. तेहने संबल दीधुं. तेहनी वस्तु लीधी. विरुद्धराज्यातिक्रम कीधो. नवा, पुराणा, सरस, विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना नेल संनेल कीधा. कूडे काटले, तोले, माने, मापे वहोर्यां. दाणचोरी कीधी. कुणहने लेखे

वरांस्यो. साटे लांच लीधी. कूडो करहो काढ्यो. विश्वासघात कीधो, परवंचना कीधी. पासंग कूडां कीधां. डांडी चढावी, लहके त्रहके कूडां काटलां मान मापां कीधां. माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची कुणहिने दीधुं. जूदी गाठ कीधी. थापण उलवी. कुणहिने लेखे पलेखे भूलव्युं. पडी वस्तु उळवी लीधी ॥ त्रीजे स्थूलअदत्तादानविरमणव्रत विषयिउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष दिवस० ॥३॥

चोथे स्वदारासंतोष, परस्त्रीगमनविरमणव्रते पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहियाइत्तर० ॥ अपरिग्गहीतागमन, इत्वर परिग्गहीतागमन कीधुं. विधवा, वेश्या, परस्त्री, कुलांगना, स्वदाराशोकतणे विषे

---

१ वेश्यागमन. २ थोडा काल माटे कोईए राखेली स्त्री साथे गमन.

दृष्टि विपर्यास कीधो. सराग वचन बोल्यां. आठम, चउदश, अनेरी पर्वतिथीना नियम लइ नांग्या. घर[1]घरणां कीधां कराव्यां.वर-वहु वखाण्यां. कुविकल्प चिंतव्यो. अनं[2]-गक्रीडा कीधी. स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां. पराया विवाह जोड्या. ढिंगला ढिंगली परणाव्यां. कामन्नोगतणे विषे तीव्र अ-न्निलाष कीधो. अतिक्रम, व्यतिक्रम, अ-तिचार, अनाचार, सुहणे स्वप्नांतरे हुआ कुस्वप्न लाध्यां. नट, विट स्त्रीशुं हांसुं कीधुं ॥ चोथे स्वदारासंतोषव्रत विष-यिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥४॥

पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रते पांच अ-तिचार ॥ धणधन्न खित्त वत्थू० ॥ धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तुं[3], रूप्य, सुवर्ण, कुप्पं[4],

---

१ नातरुं—पुनर्लग्न. २ व्यवहार विरुद्ध अंगोवडे काम-क्रिया करवी. ३ घर वगेरे इमारत. ४ त्रांबुं पित्तल वगेरे धातु.

द्विपद, चतुष्पद, ए नवविध परिग्रहतणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगे संक्षेप न कीधो. माता, पिता, पुत्र, स्त्रीतणे लेखे कीधो. परिग्रह प्रमाण लीधुं नहीं. लइने पढिउं नहीं. पढवुं विसार्युं. अलीधुं मेल्युं. नियम विसार्या ॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रत विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ५ ॥

छठे दिग्परिमाणव्रते पांच अतिचार ॥ गमणस्स उ परिमाणे० ॥ ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशिए जावा आववातणा नियम लइ भांग्या. अनाभोगे विस्मृतलगे अधिकभूमि गया. पाठवणी आघीपाछी मोकली. वहाण व्यवसाय कीधो. वर्षाकाले गामतरुं कीधुं. भूमिका एकगमा संखेपी, बीजीगमा वधारी ॥ छठे दिग्परिमाण-

व्रत विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ ६ ॥

सातमे जोगोपजोगविरमणव्रते जो-जन आश्री पांच अतिचार, अने कर्महुंती पंदर अतिचार, एवं वीश अतिचार ॥ सचित्ते पडिबद्धे० ॥ सचित्त नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं ॥ अपक्काहार, छुपक्काहार, तुछोषधितणुं जक्षण कीधुं. उला, उंबी, पोंक, पापडी खाधां ॥ सचित्त-दवविगई,—वाणहतंबोलवत्थकुसुमेसु ॥ वाहणसयणविलेवण,—बंजदिसिन्हाण-जत्तेसु ॥ १ ॥ ए चउद नियम दिनगत, रात्रिगत लीधां नहीं, लेइने जांग्यां. बा-वीश अजक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमांहि आडु, मूला, गाजर, पिंड, पिंडालू, कचूरो, सूरण, कुंलि[1] आंबली, गलो, वाघरडां

[1] कुणी--कुमळी--काची.

खाधां. वाशी कठोल, पोली, रोटली, त्रण दिवसनुं उंदन लीधुं. मधु, महुडा, माखण, माटी, वेंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करहा, घोलवडां, अजाण्यां फल, टिंबरु, गुंदा, महोर, अथाणुं, आम्बलबोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंबडां खाधां. रात्रि नोजन कीधां. लगनग वेळाए वालु कीधुं, दिवस विणउगे शीराव्या. तथा कर्मतः पन्नर कर्मादान—इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडिकम्मे, नाडिकम्मे, फोडिकम्मे, ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असइपोसणया, ए पांच सामान्य ॥ ए पांच कम्र्म, पांच वाणिज्य, पाच सामान्य एवं पन्नर कर्मादान बहुसा-

वद्य महारंभ, रागेण लीहाला[2] कराव्या. इंटनिभाडा पचाव्या. धाणी, चणा, पक्वान करी वेच्या. वाशी माखण तवाव्यां. तिल वोहोर्या, फागणमास उपरांत राख्या. दलीदो कीधो. अंगीठा कराव्या. श्वान, बिलाडा, सूडा, सालहि पोष्या. अनेरा जे कांइ बहु सावद्य खरकर्मादिक समाचर्यां. वाशीगार राखी. लींपणे, गूंपणे, महारंभ कीधो. अणशोध्या चूला संधुक्या. घी, तेल, गोल, छाशतणां भाजन उघाडां मूक्यां. तेमांहि माखी, कुंति, उंदर, घीरोली पडी. कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधी ॥ सातमे भोगोपभोगविरमणव्रत विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ७

आठमे अनर्थदंडविरमणव्रते पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुईए० ॥ कंदर्प

---

१ रंगाववानुं काम. २ कोयला.

लगे विटचेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधा. पुरुष स्त्रीना हाव, भाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या. राजकथा, भक्तकथा[1], देशकथा स्त्रीकथा कीधी. पराइ तांत[2] कीधी, तथा पैशुन्यपणुं कीधूं. आर्त्त-रौद्रध्यान ध्यायां. खांडा, कटार, कोश, कूहाडा, रथ, उखल[3], मुशल[4], अग्नि, घरंटी, निसांहे, दातरडां प्रमुख अधिकरण मेली[6] दाक्षिण्य लगे माग्यां आप्यां. पापोपदेश दीधो. अष्टमी चतुर्दशीए खांडवा दलवातणा नियम भांग्या. मूखरपणा[7] लगे असंबंध वाक्य बोल्या. प्रमादाचरण सेव्यां. अंघोले, नाहणे, दातणे, पग धोअणे, खेल पाणि तेल छांट्यां. झीलणे झील्या, जुवटे रम्या, हिंचोले हिंच्या, नाटक प्रेक्षणक जोयां.

---

१ भोजन आश्री कथा. २ वात ३ खाणीयो. ४ सांबेलुं. ५ दाळ वाटवानी ऊपर. ६ एकठा करी. ७ वाचाळपणे.

कण, कुवस्तु, ढोर लेवराव्यां. कर्कश वचन बोल्या. आक्रोश कीधा. अबोला लीधा. करकडा मोड्या. मछर धर्यो. संभेडा लगाड्या. श्राप दीधा, भेंसा, सांढ, हुंडु, कूकडा, श्वानादिक झूझार्या, झूझतां जोयां, खादिलगे अदेखाइ चिंतवी. माटी, मीठुं, कण, कपाशीया, काजविण चांप्या, ते उपर बेठा. आली[2] वनस्पति खुंदि. सूइ, शस्त्रादिक निपजाव्यां. घणी निद्रा कीधी. राग द्वेष लगे एकने ऋद्धि परिवार वांछी, एकने मृत्यु हानी वांछी ॥ आठमे अनर्थदंडविरमणव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्खदिवसमांहि० ॥ ८ ॥

नवमे सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे० ॥ सामायिक लीधे मने आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं.सावद्य वचन बोल्यां.

---

१ बोकडा. २ लीली.

शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं. ऊती वेलाए सामायिक न लीधुं. सामायिक लेइ उघाडे मुखे बोल्यां. ऊंघ आवी. वात विकथा घरतणी चिंता कीधी. वीज दीवा तणी उजेहि हुइ. कण, कपाशीया, माटी, मीठुं, खडी, धावडी, अरणेटो पाषाणप्रमुख चांप्या. पाणी, नील, फूल, सेवाल, हरीयकाय, बीयकाय, इत्यादिक आभड्यां. स्त्री, तिर्यंच तणा निरंतर[1] परम्पर[2] संघट्ट हुआ. मुहपत्तियो संघट्टी. सामायिक अणपूग्युं पार्युं, पारतुं विसार्युं ॥ नवमे सामायिकव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ए

दशमे देशावगाशिकव्रते पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहियापुग्गलपरकेवे ॥ नियमित

---

१ अंतरविना. २ परंपराए.

नूमिकामांहि बाहेरथी कांई अणाव्युं, आपण कन्हेथकी बाहेर कांइ मोकल्युं. अथवा रूप देखाडी, कांकरो नाखी, साद करी आपणपणुं बतुं जणाव्युं॥ दशमे देशावगाशिकव्रत विषयिउं अनेरो जे कोइ अतिचार पद्म दिवसमांहि० ॥ १० ॥

अग्यारमे पौषधोपवासव्रते पांच अतिचार ॥ संथारुच्चारविही० ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सज्जासंथारए ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय उच्चारपासवण नूमि ॥ पोसह लीधे संथारा तणी नूमि न पुंजी, बाहिरला लहुडां वडां स्थंडिल दिवसे शोध्यां नहीं, पडिलेह्यां नहीं. मातरुं अणपुंज्युं हलाव्युं, अणपुंजी नूमिकाए परठव्युं, परठवतां "अणुजाणहजस्सुग्गहो" न कह्यो, परठव्या पुंठे वार त्रण "वोसिरे वोसिरे" न कह्यो. पोसहशालामांहि पे-

सतां " निसीहि " निसरतां "आवस्सहि" वार त्रण जणी नहीं. पुढवी, अप्, तेउ,वाउ, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट, परिताप, उपद्रव हुआ. संथारापोरिसीतणो विधि जणावो विसार्यो. पोरिसीमांहे उंध्या. अविधे संथारो पाथर्यो. पारणादिकतणी चिंता कीधी. कालवेलाए देव न वांद्या. पडिक्कमणुं न कीधुं. पोसह असूरो लीधो, सवेरो पार्यो, पर्वतिथे पोसह लीधो नहीं. ॥ अग्यारमे पौषधोपवासव्रत विषइउ अनेरो जे कोई अतिचार पक्ष० ॥ ११ ॥

बारमे अतिथिसंविभागव्रते पांच अतिचार ॥ सचित्ते निक्खिवणे० ॥ सचित्त वस्तु हेठ उपर छतां महात्मा महासती प्रत्ये असूझतुं दान दीधुं. देवानी बुद्धे असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, परायुं फेडी आपणुं कीधुं. अणदेवानी बुद्धे सूझतुं फेडी

असू ऋतु कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं. वोहोरवा वेला टली रह्या. असुर करी महात्मा तेड्या, मत्सर धरी दान दीधुं. गुणवंत आव्ये भक्ति न साचवी, छती शक्ते स्वामीवात्सल्य न कीधुं. अनेरा धर्मक्षेत्र सीदाता छती शक्तिए उद्धर्यां नहीं, दीन[1] हीण[2] प्रत्ये अनुकंपादान न दीधुं ॥ बारमे अतिथिसंविभागव्रत विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १२ ॥

संलेषणातणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए० ॥ इहलोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, कामभोगासंसप्पउगे ॥ इह लोके धर्मना प्रभाव लगे राजऋद्धि, सुख, सौभाग्य, परिवार, वांछ्या. परलोके देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्तीतणी पदवी वांछी. सुख

---

१ निर्धन. २ दुःखी.

आव्ये जीवितव्य वाछ्युं. दुःख आव्ये मरण वांछ्युं. कामजोगतणी वांछा कीधी ॥ संलेषणाव्रत विषयिउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि० ॥ १३ ॥

तपाचार बार भेद छ बाह्य, छ अभ्यं-तर ॥ अणसण मूणोयरिआ० ॥ अणसण भणी उपवास विशेष पर्व तिथे छती शक्तिए कीधो नहीं. उणोदरीव्रत ते कोलिया पांच सात उणा रह्या नहीं. वृत्तिसंक्षेप ते द्रव्य भणी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहीं. रस[1]त्याग ते विगयत्याग न कीधो. कायक्लेश लोचादिक कष्ट कर्यां नहीं. संलीनता अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं. पञ्चक्काण भाग्यां. पाटलो डगतो फेड्यो नहीं. गंठसी, पोरिसि, साढपोरिसि, पुरिमद्ध, एकासणुं, बेआसणुं, नीवि,

१ स्निग्ध रस (विगय) नो त्याग–लोलुपतानो त्याग.

ऋहण, महारंभपरिग्रहादिक कीधा, जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सर्द्दह्या नहीं. आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी. तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य ए अढार पापस्थान कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय; दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावच्च न कीधां, अनेरुं जे कांइ वीतरागनी आज्ञा विरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय ॥ ए चिहुं प्रकार मांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर जाणतां अजाणतां हुउ होय ते सवि हुं मने, वचने कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १७ ॥

एवंकारे श्रावकतणे धर्मे, श्री समकित मूल बारव्रत, एकसोचोवीश अतिचार-मांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुउं होय ते सवि हुं मने वचने कायाए करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

इति श्री श्रावक पक्खी, चोमासी, संवच्छरी अतिचार समाप्त ॥ ५३ ॥

॥ अथ प्रभातनां पच्चक्खाण ॥

॥ प्रथम नमुक्कारसहिअमुठिसहिनुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, मुठिसहिअं पच्चक्खाइ ॥ चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥ ५४ ॥

॥ बीजुं पोरिसि साढपोरिसिनुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं,

साढपोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥ ५५ ॥

॥ त्रीजुं एकासणा बियासणानुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, विगइउ पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमा-

हिवत्तियागारेणं ॥ बियासणं पच्चख्काइ, तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारियागारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुठाणेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अछेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरइ ॥ जो एकासणानुं पच्चख्काण करवुं होय तो, बियासणांने ठेकाणे एकासणांनो पाठ केहेवो ॥ इति बियासणा एकासणानुं पच्चख्काण समाप्त ॥ ५६ ॥

॥ चोथुं आयंबिलनुं पच्चख्काण ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुठिसहिअं पच्चख्काइ॥ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं,

सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ आयंबिलं पच्चक्खाइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ एगासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ ॥ इति आयंबिलनुं पच्चक्काण ॥ ५७ ॥

॥ पांचमुं तिविहारउपवासनुं ॥

॥ सूरेउग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्काइ

तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणहार पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुठिसहिअं, पच्चरकाइ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ॥ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ॥ इति तिविहार उपवासनुं पच्चरकाण॥५८॥

॥ हवे चउविहार उपवासनुं ॥

॥ सूरे उग्गए अब्भत्तठं पच्चरकाइ चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, स-

वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति चउविहार उपवासनुं ॥ ५९ ॥

॥ अथ सांझनां पच्चख्काण ॥

॥ तिहां प्रथम बीयासणं, एकासणं, आयंबिल, तिविहार उपवास अने छठ जो करे तो तेणे पाणहारनुं पच्चख्काण करवुं ते आवी रीते—

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चख्काइ ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति ॥ ६० ॥

॥ बीजुं चउव्विहारनुं पच्चख्काण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चख्काइ चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति ॥ ६१ ॥

॥ त्रीजुं तिविहारनुं पच्चक्खाण ॥

॥ दिवस चरिमं पच्चक्खाइ ॥ तिविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति तिविहारनुं ॥ ६२ ॥

॥ चोथुं दुविहारनुं पच्चक्खाण ॥

दिवस चरिमं पच्चक्खाइ दुविहंपि आहारं, असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥ पांचमुं जे नियम धारे तेने देशावगासियनुं पच्चक्खाण करवुं तेनो पाठ ॥

॥ देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पच्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥ छहुं पोसहनुं पच्चक्खाण ॥

॥ करेमि भंते ! पोसहं, आहारपोसहं देसउं सब्बउं, सरीरसक्कारपोसहं सब्बउं, बंभचेरपोसहं सब्बउं, अब्बावारपोसहं सब्बउं, चउव्विहे पोसहे ठामि ॥ जाव दिवसं अहोरत्तं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं ॥ मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ६५ ॥

॥ इति पच्चक्खाणानि संपूर्णानि ॥

॥ अथ पोसह पारतां गाथा ॥

॥ सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो ॥ जेसिं पोसहपडिमा, अखंडिआ जीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवा य ॥ जास पसंसइ भयवं, दढवयत्तं महावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधे लीधो, विधे पार्यो, विधि क-

रतां जे कोइ अविधि हुउ होय ते सवि हुं मनवचनकायाए करी मिछामि डुक्कडं॥ इति ॥ ६६ ॥

६७ ॥ अथ संथारा पोरिसी ॥

॥ निसिही निसिही निसिही ॥ नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं, महामुणीणं. ए पाठ तथा नवकार तथा करेमिन्नंते सामाइअं० ॥ एटला सर्वपाठ त्रणवार कहीने ॥ अणुजाणह जिछिजा अणुजाणह परमगुरु, गुरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा ॥ बहुपडिपुण्णा पोरिसि, राइयसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुडिपायपसारण, अतरंत पमज्जए नूमिं ॥ २ ॥ संकोइअ संडासा, उव्वट्टंते अ कायपडिलेहा ॥ दब्बाइ उवउंगं, ऊसासनिरुंन्नणालोए ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ

रयणीए ॥ आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥ चत्तारि मंगलं–अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥ चत्तारि लोगुत्तमा–अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि–अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥ पाणाईवायमलिअं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुच्छं ॥ कोहं माणं मायं, लोभं पिज्जं तहा दोसं ॥ ८ ॥ कलहं अब्भक्खाणं, पेसुन्नं रइअरइ समाउत्तं ॥ परपरिवायं माया, मोसं मिच्छत्तसल्लं च ॥ ९ ॥ वोसिरिसु इमाइं, मुक्खमग्गसंसग्गविग्घभूआइं ॥ दुग्गइनिबंधणाइं, अट्ठारस पा-

वग्गणाइं ॥ १० ॥ एगोऽहं नत्थि मे कोई, नाहमन्नस्स कस्सई ॥ एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासई ॥ ११ ॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ॥ सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥१२॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ॥ तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ १३ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥ १४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ [1]खमह, सव्वह जीवनिकाय ॥ सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव ॥ १५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवस, चउदह राज भमंत ॥ ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झवि तेह खमंत ॥ १६ ॥ जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण भासिअं

---

१ खमिअ.

पावं ॥ जं जं काएण कयं, मिछामि छुक्कडं तस्स ॥ १७ ॥ इति संथारा पोरिसि ॥६७॥

॥ अथ चैत्यवंदननो समुदाय ॥

॥ तत्र प्रथम सीमंधरजिन चैत्यवंदन ॥

॥ सीमंधर परमातमा, शिवसुखना दाता ॥ पुक्खलवइ विजये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्व विदेह पुंडरीगिणी, नयरीए सोहे ॥ श्रीश्रेयांस राजा तिहां, नविअणानां मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकी राणी मात ॥ कुंथुअरजिन अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रज्ञु जनमीया, वली यौवन पावे ॥ मातपिता हरखे करी, रुकमिणी परणावे ॥ ४ ॥ नोगवी सुख संसारनां, संजम मन लावे ॥ मुनिसुव्रत नमि अंतरे, दीक्षा प्रज्ञु पावे ॥ ५ ॥ घाती

कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवलनाण ॥ ऋषभ लंछने शोभता, सर्व भावना जाण ॥ ६ ॥ चोरासी जस गणधरा, मुनिवर एकसो कोड ॥ त्रण भुवनमां जोअतां, नहिं कोइ एहनी जोड ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रभुजीनो परिवार ॥ एकसमय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥ ८ ॥ उदय पेढाल जिनांतरेए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जसविजय गुरु प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीध ॥ ए ॥ इति ॥६८

अथ सीमंधरजिन द्वितीय चैत्यवंदन ॥

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो ॥ करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल भक्त तुमे धणीए, जो होवे अम नाथ ॥ भवोभव हुं छुं ताहरो, नहीं मेलुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग छंडी करीए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तमारा सेवीने, शिव-

रमणी वरिशुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधर देव ॥ इहां थकी हुं वीनवुं, अवधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ ६ए

अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं त्रीजुं चैत्यवंदन ॥

विमलकेवलज्ञानकमला, कलित त्रिभुवन हितकरं ॥ सुरराजसंस्तुतचरणपंकज, नमो आदिजिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमलगिरिवरशृंगमंडण, प्रवरगुणगणभूधरं ॥ सुरअसुर किन्नर कोडि सेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरं ॥ निर्जरावली नमे अहनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीकगणपति सिद्धि साधी, कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्ति रमणी वर्या रंगे ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पातालनरसुरलोक मांही,

विमलगिरिवरतो परं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवरशिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईये ॥ निजशुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाइये ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपदस्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवाकरण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ सिद्धाचलनुं चोथुं चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र दीठे दुर्गति वारे ॥ भाव धरीने जे चढे, तेने भवपार उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाणु रिखवदेव, ज्यां ठविआ प्रभुपाय ॥ २ ॥ सूरजकुंड सोहामणो, कवडजक्ष अभिराम ॥ नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति चतुर्थ चैत्य० ॥ ११ ॥

॥अथ श्री परमात्मानुं पांचमुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेसर परमातमा, पावन परमिठ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणे में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अविकारसार, करुणारस सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रनु ताह्रश, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रनु जिनध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ स्तवनानि प्रारभ्यन्ते ॥

॥ तत्र प्रथमं सीमंधरजिनस्तवनं ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जाज्यो ॥ मुज वीनतडी, प्रेम धरीने एणिपरे तुमे संनलावजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण नुवननो नायक छे, जस चोसठ इंद्र पायक छे ॥ नाण दरिसण जेहने खा-

यक बे, सुणो० ॥ १ ॥ जस कंचनवरणी काया बे, जस धोरी लंबन पाया बे ॥ पुंडरीगिणि नगरीनो राया बे, सुणो० ॥ २॥ बार पर्षदा मांहि बिराजे बे, जस चोत्रीश अतिशय बाजे बे ॥ गुण पांत्रीश वाणीए गाजे बे, सुणो० ॥ ३ ॥ भविजनने जे पडिबोहे बे, जस अधिक शितल गुण सोहे बे ॥ रूप देखी भविजन मोहे बे सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीउं बु, पण भरतमां दूरे वसीउं बुं ॥ महामोह-राय कर फसीउं बुं, सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरीयो बे, तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयो बे ॥ ते कांइक मुजथी डरीयो बे, सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पुंठ हवे पूरो, कहे पद्म विजय थाउं शूरो ॥ तो वाधे मुज मन अति नूरो, सुणो० ॥ ७ ॥

॥ इति सीमंधरजिनस्तवनं ॥ ७२ ॥

॥ अथ द्वितीयं श्री सुबाहुजिनस्तवनं ॥

॥ चतुरसनेही मोहना ॥ ए देशी ॥

॥ स्वामी सुबाहु सुहंकरु, भूनंदा नंदन प्यारो रे ॥ निसढ नरेसर कुलतिलो, किंपुरुषानो भरतारो रे ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ कपिलंछन नलिनावती, विप्र विजय अजोध्या नाहो रे ॥ रंगे मलिये तेहश्युं, एह मणुय जनमनो लाहो रे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ ते दिन सवि एले गया, जिहां प्रभुशुं गोठ न बांधीरे ॥ भक्ति दूतीकाए मन हर्युं, पण वात कही छे आधी रे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ अनुभव मित्र जो मोकलो, तो ते सघली वात जणावे रे ॥ पण तेह विण मुझ नवि सरे, कहो तो पुत्र विचार ते आवेरे॥ स्वा० ॥ ४ ॥ तेणे जइ वात सर्व कही, प्रभु मल्या ते ध्याननने टाणेरे ॥ श्री नयविजय विबुध तणो, इम सेवक सुजस वखाणे रे ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ इति सुबाहु स्तवन ॥ ७४ ॥

॥ तृतीयं श्रीदेवजसाजिनस्तवनं ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ए देशी ॥

॥ देवजसा दरिसण करो, विघटे मोह विभाव लाल रे ॥ प्रगटे शुद्धस्वभावता, आनंद लहरी दाव लालरे ॥ देव० ॥ १ ॥ स्वामी वसो पुखरवरे, जंबू भरते दास लाल रे ॥ क्षेत्र विभेद घणो पड्यो, केम पहोंचे उल्लास लालरे ॥ देव० ॥२॥ होवत जो तनु पांखडी, तो आवत नाथ हजूर लालरे ॥ जो होवत चित्त आंखडी, देखत नित्य प्रभु नूर लालरे ॥ देव० ॥ ३ ॥ शासन भक्त जे सुरवरा, वीनवुं शीश नमाय लालरे ॥ कृपा करो मुझ उपरे, तो जिनवंदन थाय लालरे ॥ देव० ॥ ४ ॥ पूछुं पूर्व विराधना, शी कीधी एणे जीव लालरे ॥ अविरति मोह टली नहि, दीठे आगम दीव लालरे ॥ देव० ॥ ५ ॥ आतमतत्त्व

स्वभावने, बोधन शोधन काज लालरे ॥ रत्नत्रयी प्राप्तितणो, हेतु कहो महाराज लालरे ॥ देव० ॥ ६ ॥ तुज सरिखो साहिब मले, भांजे भवभ्रम टेव लालरे ॥ पुष्टालंबन प्रभु लही, कोण करे पर सेव लालरे ॥ देव० ॥ ७ ॥ दीनदयाल कृपाल तुं, नाथ भविक आधार लालरे ॥ देवचंद्र जिन सेवना, परमामृत सुखकार लाल रे ॥ देव० ॥ ८ ॥ इति ॥ ७५ ॥

॥ अथ चोथुं वीश विहरमाननुं स्तवन ॥

राग रामकली

सीमंधर युगमंधर बाहु, चोथा स्वामी सुबाहु ॥ जंबुद्वीप विदेहे विचरे, केवल कमला नाहुरे ॥ १ ॥ भविका विहरमान-जिन वंदो ॥ आतम पाप निकंदोरे ॥ भ० ॥ ए आंकणी ॥ सुजात स्वयंप्रभ ऋषभानन, अनंतवीरज चित्त धरीये ॥

सुरप्रन्न श्रीविशाल वज्जंधर, चंद्रानन धातकी एरे ॥ नवि० ॥ २ ॥ चंद्रबाहु नुजंग ने ईश्वर, नेमिनाथ वीरसेन ॥ देवजस चंद्रजसा जितवीरिय, पुस्करद्वीप प्रसन्न रे ॥ न० ॥ ३ ॥ आठमी नवमी चोवीश पचवीशमी, विदेह विजय जयवंता ॥ दश लाख केवली सो कोड साधु, परिवारे गहगहंतारे ॥ न० ॥ ४ ॥ धनुष पांचशें ऊंची सोहे, सोवनवरणी काया ॥ दोष रहित सुर महि महीतल, विचरे पावन पायारे ॥ न० ॥ ५ ॥ चोराशी लाख पूरव जिन जीवित, चोत्रीश अतिशयधारी ॥ समवसरण बेठा परमेश्वर, पडिबोहे नरनारी रे ॥ न० ॥ ६ ॥ खिमाविजय जिन करुणासागर, आप तर्या पर तारे ॥ धर्मनायक शिवमारगदायक, जन्म जरा दुःख वारेरे न० ॥ ७ ॥ ७६ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ आंखडीयेरे में आज, शत्रुंजय दीठोरे ॥ सवा लाख टकानो दहाडोरे, लागे मुने मीठोरे ॥ ए आंकणी ॥ सफल थयो मारा मननो उमाहो ॥ वाला मारा ॥ भवनो संशय भांग्योरे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीने लाग्योरे ॥ शत्रुं० ॥ १ ॥ मानव भवनो लाहो लीधो ॥ वा०॥ देहडी पावन कीधीरे ॥ सोना रुपाने फूलडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षिणा दीधीरे ॥ शत्रुं० ॥ २ ॥ दुधडे पखाली ने केसर घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीश्वर पूज्यारे ॥ श्री सिद्धाचल नयणे जोतां, पाप मेवासी धूज्यारे शत्रुं० ॥ ३ ॥ [1]स्वयंमुख सुधर्मासुरपति आगे ॥ वा० ॥ वीरजिणंद इम बोलेरे ॥ त्रण भुवनमां तीरथ मोटुं, नहिं कोइ शे-

---

१ श्रीमुख.

त्रुंजा तोलेरे ॥ शत्रुं० ॥ ४ ॥ इंद्र सरिखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चाहेरे ॥ कायानी तो कासल[1] टाले, सूरज कुंडमां नाहेरे ॥ शत्रुं० ॥५॥ कांकरे कांकरे श्रीसिद्धक्षेत्रे ॥वा०॥साधु अनंता सीध्यारे॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधारे ॥ शत्रुं० ॥६॥ नाभिराया सुत नयणे जोतां ॥ वा०॥ मेह अमीरस वुठ्यारे ॥ उदयरतन कहे आज मारे पोते, श्रीआदीश्वर त्रुठ्यारे ॥ शत्रुं० ॥ ७ ॥ इति स्तवनं ॥ ११ ॥

॥ अथ षष्ठं श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ जसोदा मावडी ॥ ए देशी ॥

॥ जात्रा नवाणु करीए विमलगिरि ॥ जात्रा नवाणु करीए ॥ ए आंकणी ॥ पूरव नवाणु वार शेत्रुंजागिरि,रिखभजिणंद समोससरीए ॥ वि० ॥ १ ॥ कोडि सहस

---

१ कासर.

भव पातक त्रुटे ॥ शेत्रुंजा साहामो डग भरीये ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छठ दोय अ-ठम तपस्या, करी चढीये गिरिवरीये वि० ॥ ३ ॥ पुंडरीक पद जपीये हरखे, अध्य-वसाय शुभ धरीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अभवि न नजरे देखे, हिंसक पण ऊध्ध-रीये ॥ वि० ॥ ५ ॥ भुंइ संथारो ने नारी तणो संग, दूरथकी परिहरीये ॥ वि०॥६॥ सचित्त परिहारी ने एकलआहारी, गुरु साथे पदचरीये ॥ वि० ॥ ७ ॥ पडिक्कमणा दोय विधिशुं करीये, पापपडल विखरीये ॥ वि० ॥ ८ ॥ कलिकाले ए तीरथ मोहोटुं, प्रवहण जिम भर दरीये ॥ वि० ॥ ९ ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंतां, पद्म कहे भव तरीये ॥ विमल० ॥ १० ॥ इति ॥ ७८ ॥

॥ अथ सप्तमं श्रीसिध्धाचलस्तवनं ॥

॥ चालो चालोने राज, श्रीसिध्धाचल-

गिरिये ॥ ए आंकणी ॥ श्रीविमलाचल-तीरथ फरसी, आतम पावन करीये ॥ चालो० ॥ १ ॥ इण गिरिउपर मुनिवर कोडी, आतम तत्व निपायो ॥ पूर्णानंद सहज अनुभवरस, महानंद पद पायो चालो० ॥ २ ॥ पुंडरिक पमुहा मुनिवर कोडि, सकल विभाव गमायो ॥ भेदाभेद तत्त्व परिणतिथी, ध्यान अभेद उपायो ॥ चालो० ॥ ३ ॥ जिनवर गणधर मुनिवर कोडी, ए तीरथ रंग राता ॥ शुद्ध शक्ति व्यक्ते गुण सिद्धि, त्रिभुवन जनना त्राता चालो० ॥ ४ ॥ ए गिरि फरसें भव्य परीक्षा, दुर्गतिनो होये छेद ॥ सम्यक् दरिसण निर्मल कारण, निज आनंद अभेद ॥ चालो० ॥ ५ ॥ संवत अढार चम्मोतरा वरसे, शुदि मागशिर तेरशीये ॥ श्रीसूरतथी भक्ति हरखथी, संघ सहित

उल्लसीये ॥ चालो० ॥ ६ ॥ कचरा कीका जिनवर भक्ति, रूपचंदजी इंद ॥ श्री श्रीसंघने प्रभु भेटाव्या, जगपति प्रथम जिणंद ॥ चालो० ॥ ७ ॥ ज्ञानानंदी त्रिभुवनवंदित, परमेश्वर गुण भीना ॥ देवचंद पद पामे अद्भुत, परम मंगल लयलीना॥ चालो० ॥ ८ ॥ इति ॥ ७९ ॥

॥ अथ अष्टमं श्रीसिद्धाचलस्तवनं ॥

॥ विमलाचल नितु वंदीये, कीजे एहनी सेवा ॥ मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० ॥ १ ॥ उज्वल जिनगृह मंडली, तिहां दीपे उत्तंगा ॥ मानुं हिमगिरि विभ्रमे, आइ अंबरगंगा ॥वि०॥ ॥ २ ॥ कोइ अनेरुं जग नहीं, ए तीरथ तोले ॥ एम श्रीमुख हरिआगले, श्रीसीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सघलां तीरथ कर्यां, जात्रा फल लहीये ॥ तेहथी ए

गिरि ज्नेटतां, शतगणुं फल कहीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ८० ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमालास्तवनं ॥

॥ शत्रुंजय ऋषज्न समोसर्या, ज्नला गुण ज्नर्यारे ॥ सिद्ध्या साधु अनंत, तीरथ ते नमुंरे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगते गयारे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरो रे ॥ ज्नरते ज्नराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति ज्नलो, त्रिज्नुवन तिलोरे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेत शिखर सोहामणो, रलीयामणोरे ॥ सिद्ध्या तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीये, हैये हरखीये रे ॥ सिद्ध्या श्रीवासु-

पूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्व दिशे पावापुरी, ऋद्धे नरीरे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती०॥ जेशलमेर जूहारीये, दुःख वारीयेरे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ती०॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीये, चिर नंदीयेरे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेश्वरो, पंचासरोरे ॥ फलोधी थंनण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजारवो, अमीझरोरे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्यदीपक देहरो, जात्रा करोरे ॥ राणपुरे रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्री नाडुलाइ जादवो, गोडिस्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन नलां रे ॥ रुचक कुंडले चार चार ॥ती०॥७॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छतीरे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ती०॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहांरे॥ समयसुंदर कहे एम ॥ती०॥८

॥ अथ श्रीमहावीरजिनछंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमा नित्य धारो, अरिक्रोधने मन्नथी दूर वारो ॥ संतोषवृत्ति धरो चित्तमांहि, राग द्वेषथी दूर थाउ उछांहिं ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्ध तत्त्वनी वात तेणे न जाणी ॥ मनुष जन्म पामी वृथा कां गमो छो, जैन मार्ग छंडी भुला कां भमोछो ॥ २ ॥ अलोभी अमानी निरागी तजो छो, सलोभी समानी सरागी भजोछो ॥ हरिहरादि अन्यथी शुं रमो छो, नदी गंग मूकी गळीमां पडो छो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ देव घाले गळे रुंड माला ॥ केइ देव उत्संगे राखेछे वामा, केइ देव साथे रमे वृंदरामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मांसभक्षी महा वीक-

राला ॥ केइ योगिणी जोगिणी जोगरागे, केइ रुद्रणी बागनो होम मागे ॥५॥ इस्या देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुखने केम चाखे ॥ जदा लोजना थोकनो पार नाव्यो, तदा मधनो बिंडुउ मन्न जाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आश- राखे, जेह पिंडने मनशुं लेअ चाखे ॥ दीन हीननी जीड ते केम जांजे, फुटो ढोल होए कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ ज्राता जजो मोहदाता, अलोजी प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंता- मणि सारिखो एह साचो, कलंकी का- चना पिंडशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धि जेह प्राणी कहे बे, सवि धर्म एकत्व जू- लो जमेबे ॥ कीहां सर्षवा ने कीहां मेरु धीरं, कीहां कायरा ने कीहां शूरवीरं॥९॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंजखंडं, कीह

कोद्रवा ने कीहां खीरमंडं ॥ कीहां खीरसिंधु कीहां क्षारनीरं, कीहां कामधेनु कीहां बागखीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कूडवाणी, कीहां रंकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहां नारकी ने कीहा देव नोगी, कीहां इंद्रदेही कीहां कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्मघाती कीहां कर्मधारी, नमो वीर स्वामी नजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन माचे, ते जना मूढमां श्रेष्ठ शुं इष्ट गाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंभरोशी, सजो पुण्य पोशी नजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आश धारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तुहीं तुहीं तुहीं प्रभु परमरागी, नवफेरनी शृंखला मोह नागी ॥ १४ ॥ मानीये वी-

रजी अर्ज छे एक मोरी, दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुउ गुरु आज मेरो, विवेके लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥ ८२ ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टकछंद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदीश ॥ जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे, मनवांछित हेला संपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरूआ वंकमा, तस नामे नावे ढुंकडा ॥ भूत प्रेत नवि मंडे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मल काय, गौतम नामे वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जयजयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल, मनवंछित

कापड तंबोल ॥ घर सुघरणी निर्मल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल जाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोहोटां मंदिर मेरुसमान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारु पोहोंचे वंछित कोड ॥ महीयल माने मोहोटा राय, जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्यसमय करजोड, गौतम तूठे संपत्ति कोड ॥ ए ॥ इति ॥ ८३ ॥

॥ अथ पंचतीर्थी चैत्यवंदन ॥

॥ आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां

करूं प्रणाम ॥ शत्रुंजय श्रीआदिदेव, तेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ, आबु ऋषभ जुहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरे, जिन चोवीशे जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं, भरते भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिन पाय ॥ वैभारगिरिवर ऊपरे, श्रीवीरजिनेश्वरराय ॥ ४ ॥ मांडवगढनो राजीयो, नामे देव सुपास ॥ ऋषभ कहे जिन समरतां, पोहोंचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति॥

॥ अथ पञ्चमीनी थुइ लिख्यते ॥

पञ्चानन्तकसुप्रपञ्चपरमानन्दप्रदानक्षमं, पञ्चानुत्तरसीमदिव्यपदवीवश्याय मन्त्रोपमम्। येन प्रोज्वलपञ्चमीवरतपो व्याहारि तत्कारणं, श्रीपञ्चाननलाञ्छनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पञ्चाश्रवरोधसाधनपराः पञ्चप्रमादाहराः, पञ्चाणुव्रत-

पञ्चसुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः। कृत्वा पञ्चहृषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पञ्चमीं, तेऽमी संयमपञ्चमीव्रतभृतां तीर्थङ्कराः शङ्कराः ॥ २ ॥ पञ्चाचारधुरीणपञ्चमगणाधीशेन संसूत्रितं, पञ्चज्ञानविचारसारकलितं पञ्चेषुपञ्चत्वदम्। दीपाभं गुरुपञ्चमारतिमिरे एकादशीरोहिणी–पञ्चम्यादिकुप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पञ्चानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपञ्चमेरुश्रियं, भक्तानां भविनां गृहेषु बहुशो या पञ्चदिव्यं व्यधात्। प्रह्वे पञ्च जगन्मनोमतिकृतौ स्वारत्नपाञ्चालिका, पञ्चम्यादितपोवतां भवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति ॥ ७५ ॥

॥ अथ एकादशीस्तुतिर्लिख्यते ॥

श्रीभानेमिर्बभाषे जलशयसविधे स्फूर्तिमेकादशीयां, माद्यन्मोहावनीन्द्रप्रशमन-

विशिखः पञ्चबाणार्चिरणैः । मिथ्यात्वध्वान्तवान्तौ रविकरनिकरस्तीव्रलोभाद्रिवज्रं, श्रेयस्तत्पर्व वस्ताच्छिवसुखमिति वा सुव्रतश्रेष्ठिनोऽभूत् ॥ १ ॥ इन्द्रैरभ्रभ्रमद्भिर्मुनिपगुणरसास्वादनानन्दपूर्णै-र्दिव्यद्भिः स्फारहारैर्ललितवरवपुर्यष्टिभिस्स्ववर्वधूभिः । सार्द्धं कल्याणकौघो जिनपतिनवतेर्बिन्दुभूतेन्दुसंख्यो, घस्रे यस्मिन् जगे तद् भवतु सुभविनां पर्व सद्धर्महेतुः ॥ २ ॥ सिद्धान्ताब्धिप्रवाहः कुमतजनपदान् प्लावयन् यः प्रवृत्तः, सिद्धिद्वीपं नयन् धीधनमुनिवणिजः सत्यपात्रप्रतिष्ठान्। एकादश्यादिपर्वेन्दुमणिमतिदिशन्धीवराणां महार्घ्यं, सन्यायायाम्भसश्च नित्यं प्रवितरतु स नः स्वप्रतीरे निवासम् ॥ ३ ॥ तत्पर्वोद्यापनार्थं समुदितसुधियां शम्भुसंख्याप्रभेया-मुत्कृष्टां वस्तुवीथीमभयदसदने प्रा-

भृतीकुर्वंतां ताम् । तेषां सव्याकृपादैः प्रलपितमतिभिः प्रेतभूतादिभिर्वा, दुष्टैर्जन्यं त्वजन्यं हरतु हरितनुन्यस्तपादाम्बिकाख्या ॥ ४ ॥ ८६ ॥

॥ अथ पंचतीर्थ थोयो

॥श्लोक॥ श्रीशत्रुञ्जयमुख्यतीर्थतिलकं श्री नाभिराजाङ्गजं, वन्दे रैवतशैलमौलिमुकुटं श्रीनेमिनाथं तथा । तारङ्गेऽप्यजितं जिनं भृगुपुरे श्रीसुव्रतं स्तम्भने,श्रीपार्श्वं प्रणमामि सत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा ॥१॥ वन्देऽनुत्तरकल्पतल्पभुवने ग्रैवेयकव्यन्तर-ज्योतिष्कामरमन्दराद्रिवसतीं-स्तीर्थङ्करानादरात् । जम्बूपुष्करधातकीषु रुचके नन्दीश्वरे कुण्डले, ये चान्येऽपि जिना नमामि सततं तान् कृत्रिमाकृत्रिमान् ॥२॥ श्रीमद्वीरजिनास्यपद्महृदतो निर्गम्य तं गौतमं, गङ्गावर्तनमेत्य या प्रबिभिदे मिथ्या-

त्ववैताढ्यकम् । उत्पत्तिस्थितिसंहृतित्रिपथ-
गा ज्ञानाम्बुधावृध्धिगा, सा मे कर्ममलं ह-
रत्वविकलं श्रीद्वादशाङ्गी नदी ॥३॥ शक्र-
श्चन्द्ररविग्रहाश्च धरणब्रह्मेन्द्रशान्त्यम्बिका,
दिक्पालाः सकपर्दिगोमुखगणिश्चक्रेश्वरी
भारती । येऽन्ये ज्ञानतपःक्रियाव्रत-
विधिश्रीतीर्थयात्रादिषु, श्रीसङ्घस्य तुरा
चतुर्विधसुरास्ते सन्तु भद्रङ्कराः ॥ ४ ॥
इति श्रीपंचतीर्थस्तुतिः ॥ ८७ ॥

॥ अथ शंखेश्वरपार्श्वजिनस्तुतिः ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजिये, नरभवनो
लाहो लीजीये ॥ मन वंछित पूरण सु-
रतरु, जय वामा सुत अलवेसरु ॥ १ ॥
दोय राता जिनवर अति भला, दोय
धोला जिनवर गुणनिला ॥ दोय लीला
दोय शामळ कह्या, सोले जिन कंचनवर्ण
लह्या ॥ २ ॥ आगम ते जिनवर भाखीयो,

गणधर ते हइडे राखीयो ॥ तेहनो रस जेणे चाखीयो, ते हुउं शिवसुख साखीयो ॥ ३ ॥ धरणीधर राय पद्मावती, प्रनु पार्श्वतणा गुण गावती ॥ सहु संघनां संकट चूरती, नयविमलनां वंछित पूरती ॥ ४ ॥ इति ॥ ८८ ॥

॥ अथ सज्झायो प्रारंन ॥

॥तत्र प्रथम श्री विनयअध्ययननी सज्झाय॥

॥ श्रीनेमीसर जिनतणुंजी ॥ ए देशी ॥

पवयण देवी चित्त धरी जी, विनय वखाणीश सार ॥ जंबुने पूछ्ये कह्यो जी, श्रीसोहम गणधार ॥ १ ॥ नविक जन विनय वहो सुखकार ॥ ए आंकणी ॥ पहिले अध्ययने कह्यो जी, उत्तराध्ययन मझार ॥ सघला गुणमां मूलगोजी, जे जिनशासन सार ॥ २ ॥ नवि० ॥ नाण विनयथी पामीए जी, नाणे दरिसण शुद्ध ॥

चारित्र दरिसणथी हुए जी, चारित्रथी पुण सिद्ध ॥ ३ ॥ जवि० ॥ गुरुनी आण सदा धरेजी, जाणे गुरुनो जाव ॥ विनयवंत गुण रागीउंजी, ते मुनि सरल स्वजाव ॥ ४ ॥ जवि ० ॥ कणनुं कुंडुं परिहरीजी, विष्टाशुं मन राग ॥ गुरुद्रोही ते जाणवाजी, सुअर उपमा लाग ॥ ५ ॥ जवि० ॥ कोह्या काननी कूतरीजी, गाम न पामीरे जेम ॥ शीलहीण अकह्यागराजी, आदर न लहे तेम ॥ ६ ॥ जवि०॥ चंद्रतणीपेरे उजली जी, कीरति तेह लहंत ॥ विषय कषाय जीती करी जी, जे नर शील वहंत ॥ ७ ॥ जवि० ॥ विजयदेव गुरुपाटवीजी, श्रीविजयसिंह सूरींद ॥ शिष्य उदय वाचक जणेजी, विनय सयल सुखकंद ॥ ८ ॥ जवि० ॥ इति ॥ ८ए ॥

॥ अथ द्वितीय शिखामण सज्झाय ॥

॥ जीव वारुं छुं मोरा वालमा, परनारीथी प्रीति म जोड ॥ परनारीनी संगत नहीं जली, तारा कूलमां लागशे खोड ॥ जीव० ॥ १ ॥ जीव आ संसार ले कारमो, दीसे ले आळ पंपाळ ॥ जीव एहवुं जाणी चेतजो, आगल माठीडे नाखीले जाल ॥ जीव० ॥ २ ॥ जीव मात पिता जाइ बेनडी, सहु कुटुंब तणो परिवार ॥ जीव वेती वारे सहु सगुं, पले लांबा कीधा जूहार ॥ जीव० ॥ ३ ॥ देहली लगे सगी अंगना, शेरी अ लगे सगी माय ॥ जीव सीम लगे साजन जलो, पले हंस एकीलो जाय ॥ जीव० ॥ ४ ॥ जीव जातां थका नवि जाणीयुं, नवि जाण्यो वार कुवार ॥ जीव गाडुं जरीयुं इंधणे, वळी खोखरी हांडली सार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जीव आठम

पाखि न उलखी, जीव बहुलां कीधां पाप ॥ जीव सुमतिविजय मुनि एम भणे, जीव आवागमन निवार ॥ जी० ॥ ६ ॥ इति ॥ ए० ॥

॥ अथ अनाथी मुनिनी सज्झाय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चड्यो, पेखीयो मुनि एकंत ॥ वररूप कांते मोहिउ, राय पूछेरे कहोने विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुंरे अनाथी निग्रंथ ॥ तिणे में लीधोरे साधुजीनो पंथ ॥ श्रेणिक० ॥ ए आंकणी ॥ इणे कोसंबी नयरी वसे, मुझ पिता परिघल धन ॥ परिवार पूरे परिवर्यो, हुं छुं तेहनोरे पुत्र रतन ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक दिवस मुज वेदना, उपनी में न खमाय ॥ मात पिता झूरी मरे, पण समाधि किणे नवि थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुणमणि उरडी, चोरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, कोणे न कीधी मोरडी सार ॥

श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बोलाविया, कीधला कोटि उपाय ॥ बावनाचंदन चरचियां, तोहि पणरे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ जगमांहि को केहनो नहीं, ते जणी हुंरे अनाथ ॥ वीतरागना धरम सारिखो, नहिं कोइ बीजोरे मुक्तिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ वेदना जो मुज उपशमे, तो लेउं संजम जार ॥ इम चिंतवतां वेदन गइ, व्रत लीधुं में हर्ष अपार ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ करजोडी रायगुण स्तवे, धन्य धन्य ए अणगार ॥ श्रेणिक समकित पामियो, वांदी पोहोतोरे नगर मजार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनि अनाथी गुण गावतां, तूटे कर्मनी कोड ॥ गणि समयसुंदर तेहना, पाय वंदेरे बे करजोड ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति अनाथी सज्जाय ॥ ९१ ॥

॥ अथ श्रीनेम राजुलनी सज्जाय ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, उडे दोय पंखीया.

ए देशी ॥ पिउजी पिउजीरे नाम, जपुं दिन रातियां ॥ पिउजी चाल्या परदेश, तपे मोरी गतीयां ॥ पग पग जोती वाट, वालेसर कब मिले ॥ नीर विछोह्यां मीन के, ते ज्युं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज, साहिब विण नवि गमे ॥ जिहांरे वालेसर नेम, तिहां मारुं मन भमे ॥ जो होवे सज्जन दूर, तोहि पासे वसे ॥ किहां सायर किहां चंद, देखि मन उल्लसे ॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीत, म करजो को सही ॥ पतंग जलावे देह, दीपक मनमें नहीं ॥ वाला माणसनो विजोग, म होजो केहने ॥ सालेरे साल-समान, हइयामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड, जोबन अति दहे ॥ जेनो पियु परदेश ते, माणस दुःख सहे ॥ झुरी झुरी पंजर कीध, काया कमल जिसी ॥ ह-जीअ न आव्या नेम, मली नयणे हसी

॥ ४ ॥ जेने जेहशुं रंग, टाळ्यो ते नवि टळे ॥ चकवा रयणी विजोग, ते तो दिवसे मळे ॥ आंबा केरो स्वाद, लिंबु ते नवि करे ॥ जे नाह्या गंगा नीर, ते छिल्लर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फूल, धतूरे केम रमे ॥ जेहने घीयशुं प्रेम, ते तेले किम जमे ॥ जेहने चतुरशुं नेह, ते अवरने शुं करे ॥ नव जोबन तजी नेम, वैरागी थइ फरे ॥ ६ ॥ राजुल रूप निधान, पोहोती सहसावने ॥ जइ वांद्या प्रभु नेम, संजम लइ एक मने ॥ पाम्या केवलज्ञान, पोहोती मननी रळी ॥ रूपविजय प्रभु नेम, भेट्ये आशा फळी ॥७॥ इति ॥ ७९ ॥

॥ अथ आप स्वभावनी सज्झाय ॥

॥ आप स्वभावमां रे, अवधु सदा मगनमें रहना ॥ जगत जीव हे कर्माधिना, अचरिज कछुअ न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥

तुम नही केरा कोइ नही तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा हे सो तेरी पासे, अवर सबे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब हे इनकुं विलासी ॥ वपु संग जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आशा सदा निराशा, ए हे जगजन पासा ॥ ते काटनकुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥५॥ कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुवा अपभ्राजी ॥ कबहीक जगमें कीर्ती गाजी, सब पुद्गळकी बाजी ॥ आ० ॥६॥ शुध उपयोग ने समताधारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिवनारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ नवस्मरणप्रारम्भः ॥

१ ॥ प्रथमं नवकारपंचमङ्गलरूपम् ॥

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ नमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंचनमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं॥९॥इति॥१॥

२ ॥ अथ उवसग्गहरं स्तवनम् ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुउ । तस्स गहरोगमारी–दुठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ । नरतिरिएसुवि जीवा, पावंति न दुरकदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लध्दे,

चिंतामणिकप्पपायवब्नहिए । पावंति अ-
विग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुउं महायस !, नत्तिब्नरनिब्नरेण
हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, नवे
नवे पास जिणचंद ! ॥ ५ ॥ इति ॥ २ ॥

३ ॥ अथ संतिकरस्तवनम् ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जय-
सिरीइ दायारं । समरामि नत्तपालग—नि-
व्वाणीगरुम्कयसेवं ॥ १ ॥ ॐ स नमो वि-
प्पोसहि—पत्ताणं संतिसामिपायाणं । झ्रौं
स्वाहामंतेणं, सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥२॥
ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिप-
त्ताणं । सौं ह्रीं नमो सव्वोसहिपत्ताणं च
देइ सिरिं ॥ ३ ॥ वाणी तिहुअणसामिणि,
सिरिदेवी जक्करायगणिपिडगा । गहदिसि-
पालसुरिंदा, सयावि रक्कंतु जिणनत्ते॥४॥
रक्कंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला

य सया । वजंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि महकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा । अच्चुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीउ ॥६॥ जक्खा गोमुह महजक्ख, तिमुह जक्खेस तुंबरू कुसुमो । मायंगविजयअजिआ, बंभो मणुउ सुरकुमारो ॥ ७ ॥ छम्मुह पयाल किन्नर, [1]गरुलो गंधव्व तह य जक्खिंदो । कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पासमायंगा ॥ ८ ॥ देवीउ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि कालि महकाली । अच्चुअ संता जाला, सुतारयासोअ सिरिवच्छा ॥ ए ॥ चंडा विजयंकुसि पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी । वइरुट्टछुत्त गंधारिअंबपउमावई सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तित्थरक्खणरया, अन्नेवि सुरा सुरी य चउहावि । वं-

---

१ गरुडो.

तरजोइणिपमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥११॥ एवं सुदिट्ठिसुरगण-सहिउ संघस्स संतिजिणचंदो मज्झवि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअ संतिनाहसम्मदिट्ठिरक्खं सरइ तिकालं जो। सव्वोवद्दवरहिउ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥ तवगच्छगयणदिणयर-जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरूणं । सुपसायलद्ध-गणहर-विज्जासिद्धी भणइ सीसो ॥ १४ ॥

॥ इति संतिकरस्तवनम् ॥ ३ ॥

४ ॥ अथ तिजयपहुत्तनामस्मरणम् ॥

तिजयपहुत्तपयासय-अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं । समयक्खित्तठिआणं, सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असीआ, पणरस पन्नास जिणवरसमूहो। नासेउ सयल दुरिअं, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयालावि य, तीसा

पन्नत्तरी जिणवरिंदा । गहभूअरक्खसाइ-
णि–घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सत्तरि
पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो ।
वाहिजलजलणहरिकरि–चोरारिमहाभयं
हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्ना य दसेव य,
पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा । रक्खंतु मे
सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा॥५॥ॐ हर-
हुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह य चेव सरसुं-
सः । आलिहियनामगब्भं, चक्कं किर सव्वउ
भद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणि पन्नत्ती, वज्जसिं-
खला तह य वज्जअंकुसिआ । चक्केसरि
नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥७॥
गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तह य
अछुत्ता । माणसि महमाणसिआ, विज्जा-
देवीउ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदसकम्मभूमिसु,
उप्पन्नं सत्तरी जिणाण सयं । विविहर-
यणाइवन्नो–वसोहिअं हरउ डुरिआइं॥९॥

चउसीसअइसयजुआ, अठमहापाडिहेर-
कयसोहा । तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा
पयत्तेणं ॥ १८ ॥ ॐ वरकणयसंखवि-
द्दुम–मरगयघणसन्निहं विगयमोहं । स-
त्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे ॥
स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भवणवइ वाणवंतर,
जोइसवासी विमाणवासी अ । जे केवि
दुठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु ममं ॥ स्वाहा
॥ १२ ॥ चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहि-
ऊण खालिअं पीअं । एगंतराइगहभू-
अ–साइणिमुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥ इअ
सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडि-
लिहिअं । दुरिआरि विजयवंतं, निब्भंतं
निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति ॥ ४ ॥

५ ॥ अथ नमिऊणनामकं स्मरणम् ॥

नमिऊण पणयसुरगण–चूडामणिकिरण-
रंजिअं मुणिणो । चलणजुअलं महा-

भय-पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ स-डियकरचरणनहमुह, निबुड्डनासा विवन्न-लायणा। कुठमहारोगानल-फुलिंगनिद्दड्ढ-सव्वंगा ॥ २ ॥ ते[1] तुह चलणाराहण-स-लिलंजलिसेयवुड्ढियच्छाया (उच्छाहा)। वणदवदड्ढा गिरिपा-यवव्व पत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ दुव्वायखुभियजलनिहि, उब्भडक-ल्लोलभीसणारावे । संभंतभयविसंठुल-निज्जामयमुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ-जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं । पासजिणचलणजुअलं, निच्चं चिअ जे न-मंति नरा ॥ ५ ॥ खरपवणुद्धुअवणदव-जालावलिमिलियसयलदुमगहणे । डज्झं-तमुद्धमयवहु-भीसणरवभीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वा-विअसयलतिहुअणाभोअं । जे संभरंति

---

१ जे.

मणुआ, न कुणइ जलणो नयं तेसिं ॥७॥ विलसंतभोगभीसण, फुरिआरुणनयण-तरलजीहालं । उग्गभुअंगं नवजलय-सत्थहं[1] भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीडस-रिसं, दूरपरिछूढविसमविसवेगा । तुह नामक्खरफुडसिद्धमंतगुरुआ[2] नरा लोए॥९॥ अडवीसु भिल्लतक्कर–पुलिंदसद्दूलसद्दभी-मासु । भयविहुरवुन्नकायर–उल्लूरिअप-हिअसत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसा-रा, तुह नाह ! पणाममत्तवावारा । ववगय-विग्घा सिग्घं, पत्ता हियइच्छियं ठाणं॥११॥ पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं म-हाकायं । नहकुलिसघायविअलिअ–गइं-दकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणयससंभम-पत्थिव–नहमणिमाणिक्कपडिअपडिमस्स । तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न ग-

[1] सच्छहं. [2] गरुआ.

णंति ॥ १३ ॥ ससिधवलदंतमुसलं, दीह-
करुल्लालवुड्ढिउच्छाहं । महुपिंगनयणजु-
अलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥ १४ ॥
भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते न वि ग-
णंति । जे तुम्ह चलणजुअलं, मुणिवइ-
तुंगं समल्लीणा ॥१५॥ समरम्मि तिक्खख-
ग्गा-भिग्घायपविद्धउद्धुयकबंधे। कुंतविणि-
भिन्नकरिकलह-मुक्कसिक्कारपउरंमि ॥ १६ ॥
निज्जियदप्पुद्धररिउ-नरिंदनिवहा भडा जसं
धवलं । पावंति पावपसमिण, पासजिण !
तुह प्पभावेण ॥ १७ ॥ रोगजलजलणवि-
सहर—चोरारिमइंदगयरणभयाइं । पास-
जिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं॥१८॥
एवं महाभयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमु-
आरं । भवियजणाणंदयरं, कल्लाणपरंपर-
निहाणं ॥ १९ ॥ रायभयजक्खरक्खस—कु-
सुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु । संझासु दोसु

पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स । पासो पावं पसमेउ सयलभुवणच्चिअचलणो ॥ २१ ॥ उवसग्गंते कमठा—सुरम्मि झाणाउ जो न संचलिउ । सुरनरकिन्नरजुवईहिं, संथुउ जयउ पासजिणो ॥ २२ ॥ एअस्स मज्झयारे, अट्ठारसअक्खरेहिं जो मंतो । जो जाणइ सो झायइ, परमपयत्थं फुडं पासं ॥ २३ ॥ पासह समरण जो कुणइ, संतुट्ठे हियएण । अट्ठुत्तरसयवाहिभय, नासइ तस्स दूरेण ॥ २४ ॥ इति श्रीमहाभयहरनामकं स्मरणं संपूर्णम् ॥ ५ ॥

६ ॥ अथ अजितशान्तिस्तवन ॥

॥ अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं । जयगुरु संतिगुणकरे, दो-वि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगयमगुलभावे, तेऽहं विउलतवनिम्म-
लसहावे। निरुवममहप्पभावे, थोसामि
सुदिठसब्भावे॥ २॥ गाहा॥ सव्वदुक्खप्पसं-
तीणं, सव्वपावप्पसंतिणं। सया अजियसं-
तीणं, नमो अजिअसंतिणं॥ ३॥ सिलोगो॥
अजियजिण! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम!
नामकित्तणं। तह य धिइमइ[1]प्पवत्तणं,
तव य जिणुत्तम! संति! कित्तणं॥४॥ मा-
गहिआ॥ किरिआविहिसंचिअकम्मकि-
लेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गु-
णेहिं महामुणिसिद्धिगयं। अजिअस्स
य संति महामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं
मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं॥ ५॥
आलिंगणयं॥ पुरिसा! जइ दुक्खवारणं, जइ
अ विमग्गह सुक्खकारणं। अजिअं संतिं
च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा॥ ६॥

१ मईपवत्तणं.

मागहिआ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअमु-
वरयजरमरणं, सुरअसुरगरुलभुयगवइप-
ययपणिवइअं । अजिअमहमविअ सुन-
यनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भु-
विदिविजमहिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ सं-
गययं ॥ तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्त-
धरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं ।
संतिकरं[1] पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संति-
मुणी[2] मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥
सोवाणयं॥सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि-
मत्थयपसत्थविच्छिन्नसंथिअं ।थिरसरिच्छवच्छं
मयगललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्थाणप-
त्थियं संथवारिहं, हत्थिहत्थबाहुं धंतकणग-
रुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचिअ-
सोमचारुरूवं, सुइसुहमणाभिरामपरमरम-
णिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं

१ संतियरं. २ संतिमुणि.

॥ ए ॥ वेड्डुर्ज ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसवनयं नवोहरिजं। पणमासि अहं पयर्ज, पावं पसमेउ मे नयवं ॥ १० ॥रासालुद्धर्ज ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तर्ज महाचक्कवट्टिनोए महप्पनावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो । चउदसवररयणनवमहानिहिचउसठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई, चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी, उन्नवइगामकोडिसामी आसी जो नारहंमि नयवं ॥ ११ ॥ वेड्डुर्ज ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिणं सबनया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥१२॥ रासानंदिअयं ॥ इस्काग विदेहनरीसर, नरवसहा मुणिवसहा, नवसारयससिसकलाणण, विगयतमा विहुअरया, अजिउत्तमतेअगुणेहिं म-

हामुणिअमिअबला विउलकुला, पणमामि ते भवभयमूरण, जगसरणा मम सरणं॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देवदाणविंदचंदसूरवंदहठतुठजिठपरम–लठरूवधंतरुप्पपट्टसेअसुद्धनिद्धधवल । दंतपंतिसंतिसत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर, दित्ततेअ वंदधेअ सव्वलोअभाविअप्पभावणेअ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ ॥ विमलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरकराइरेअतेअं । तिअसवइगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं । तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगपरिरिंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी । रूवगुणेहिं पावइ न

तं तिअसगणावइ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअकलिकलुसं । संतिसुहप्पवत्तयं तिगरणपयउ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणउणयसिररइअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं, विबुहाहिवधणवइनरवइथुअमहिअच्चिअं बहुसो । अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पभं तवसा, गयणंगणवियरणसमुइअचारणवंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं, किन्नरोरगनमंसिअं । देवकोडिसयसंथुअं, समणसंघपरिवंदिअं॥२०॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं । अजिअं अजिअं, पयउ पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आगया वरविमाणदि-

वकणागरहतुरयपहकरसएहिं हुलिअं । स-संभमोअरणखुभिअलुलिअचलकुंडलंगयतिरीडसोहंतमउलिमाला ॥ २२ ॥ वेड्डओ ॥ जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता, आयरभूसिअसंभमपिंडिअसुट्ठुसुविम्हिअसव्वबलोघा । उत्तमकंचणरयणपरूविअभासुरभूसणभासुरिअंगा, गायसमोणयभत्तिवसागयपंजलिपेसियसीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजली, रागदोसभयमोहवज्जिअं । देवदाणवनरिंदवंदिअं, संतिमुत्तमं महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललि-

अहंसवहुगामि[1]णिआहिं । पीणसोणि-
थणसा[2]लिणिआहिं, सकलकमलदललो-
अणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीणनि-
रंतरथणभरविणमियगायलयाहिं, मणि-
कंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं।
वरखिंखिणिनेउरसतिलयवलयविभूसणि-
याहिं, रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणि-
आहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंद-
रीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स
ते सुविक्कमा कमा अप्पणो निडालएहिँ
मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिँवी अवंग-
तिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिँ संगयं-
गयाहिँ भत्तिसन्निविठवंदणागयाहिँ हुंति
ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥
तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं ।
धुयसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥

---

१ गामणि. २ सालणि.

नंदिअयं ॥ थुअवंदिअयस्सा रिसिगण-
देवगणेहिं, तो देववहूहिं पयउ पणमि-
अस्सा । जस्स जगुत्तमसासणअस्सा,
भत्तिवसागयपिंडिअआहिं । देववरच्छर-
सा बहुआहिं, सुरवररइगुणपंडिअआहिं
॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंससद्दतंतितालमे-
लिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए अ,
सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीअपायजाल-
घंटिआहिं वलयमेहलाकलावनेउराभिरा-
मसद्दमीसए कए अ । देवनट्टिआहिं हा-
वभावविब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग-
हारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा
कमा, तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं प-
संतसव्वपावदोसमेसहं नमामि संतिमुत्तमं
जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउ ॥ छत्तचामरपडा-
गजूअजवमंडिआ, झयवरमगरतुरयसि-
रिवच्छसुलंछणा । दीवसमुद्दमंदरदिसाग-

यसोहिआ, सत्थिअवसहसीहरहचंक्कवरं-
किया ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा
समप्पइठा, अदोसदुठा गुणेहिँ जिठा ।
पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहिँ इठा
रिसीहिं जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते
तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमू-
लपावया । संथुआ अजिअसंतिपायया,
हुंतु मे सिवसुहाण दायया ॥ ३४ ॥ अ-
परांतिका ॥ एवं तवबलविउलं, थुअं मए
अजिअसंतिजिणजुअलं । ववगयकम्म-
रयमलं, गइं गयं सासयं विउलं[2] ॥ ३५ ॥
गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण
परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं,
कुणउ अ परिसावि अ प्पसायं ॥ ३६ ॥
गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ
नंदिसेणमभिनंदिं । परिसावि अ सुह-

१ सिरिवछ सुलंछणा (सुलंछिआ) इति पाठांतरं. २ विमलं.

नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअचाउम्मासिअ-संवछरिए[1] अवस्स भणिअव्वो । सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिअसंतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्नावि नासंति ॥ ३९ ॥ जइ इछह परमपयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥४०॥इति श्रीअजितशान्तिस्तवनम् ॥६॥

७ ॥ अथ भक्तामरस्मरणप्रारम्भः ॥

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा—वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा—दुद्भूतबु-

---

१ संवछरं राइए अ दिअहे अ

ङ्घिपटुभिः सुरलोकनाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रि-
तयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं
प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ बुद्ध्या विनाऽपि
विबुधार्चितपादपीठ!, स्तोतुं समुद्यतमति-
र्विगतत्रपोऽहम् । बालं विहाय जलसं-
स्थितमिन्दुबिम्ब–मन्यः क इच्छति जनः
सहसा ग्रहीतुम्? ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गु-
णसमुद्र! शशाङ्ककान्तान्, कस्ते क्षमः सुर-
गुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या? । कल्पान्तकालप-
वनोद्धतनक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमम्बु-
निधिं भुजाभ्याम्? ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि
तव भक्तिवशान्मुनीश!, कर्तुं स्तवं विगत-
शक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य
मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः प-
रिपालनार्थम्? ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुत-
वतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकु-
रुते बलान्माम् । यत्कोकिलः किल मधौ

मधुरं विरौति, तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं,पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्। आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद–मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात्। चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति। दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूतनाथ!,भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः। तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा ? भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति॥१०॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र

तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः। पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ? ॥ ११ ॥ यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत !। तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ?। बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य ?, यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप-शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति । ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ? ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ?। कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन,

किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्? ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति । नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमाऽसि मुनीन्द्र! लोके॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् । विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा?, युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ! । निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः?॥ १९॥ ज्ञानं यथा त्वयि

विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरि-
हरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु
याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले कि-
रणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरा-
दय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तो-
षमेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन
नान्यः,कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि
॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति
पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्र-
सूता । सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-
रश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजा-
लम् ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं
पुमांस-मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः
शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः॥ २३ ॥
त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्र-
ह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् । योगीश्वरं

विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शङ्करोऽसि भुवनत्रयशङ्करत्वात् । धातासि धीर! शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ!, तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन! भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र? यदि नाम गुणैरशेषै–स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश! । दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख–माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिम्बं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति॥२८॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् । बिम्बं वियद्विलसदंशुलतावितानं, तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुन्दावदातचलचामरचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् । उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्झरवारिधार–मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् । मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपङ्कजपुञ्जकान्ति-पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र!, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभा दिनकृतः

प्रहतान्धकारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य वि-
काशिनोऽपि? ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविलवि-
लोलकपोलमूल–मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृ-
द्धकोपम्। ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्
॥ ३४॥ भिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिता-
क्त--मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः। ब-
द्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रा-
मति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ क-
ल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निकल्पं, दावानलं
ज्वलितमुज्ज्वलमुत्फुलिङ्गम्। विश्वं जिघ-
त्सुमिव संमुखमापतन्तं, त्वन्नामकीर्तनजलं
शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समद-
कोकिलकण्ठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमु-
त्फणमापतन्तम्। आक्रामति क्रमयुगेन
निरस्तशङ्क,-स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य
पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरङ्गगजगर्जितभी-

मनाद्-माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्त-
नात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुन्ता-
ग्रभिन्नगजशोणितवारिवाह—वेगावतारतर-
णातुरयोधभीमे । युद्धे जयं विजितदुर्ज-
यजेयपक्षा--स्त्वत्पादपङ्कजवनाश्रयिणो ल-
भन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभीष-
णनक्रचक्र—पाठीनपीठभयदोल्बणवाड-
वाग्नौ । रङ्गत्तरङ्गशिखरस्थितयानपात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति
॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः,
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।
त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भ-
वन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आ-
पादकण्ठमुरुशृङ्खलवेष्टिताङ्गा, गाढं बृह-
न्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः । त्वन्नाममन्त्रम-
निशं मनुजाः स्मरन्तः, सद्यः स्वयं विग-

तबन्धभया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपे-न्द्रमृगराजदवानलाहि-संग्रामवारिधिमहो-दरबन्धनोत्थम् । तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमा-नधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णवि-चित्रपुष्पाम् । धत्ते जनो य इह कण्ठग-तामजस्रं, तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

॥ इति भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ७ ॥

८॥अथ श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रं प्रारभ्यते॥

॥ वसन्ततिलकावृत्तम् ॥

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, भी-ताभयप्रदमनिन्दितमङ्घ्रिपद्मम् । संसारसा-गरनिमज्जदशेषजन्तु-पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमा-म्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्वि-

तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्यधीशाः ? । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ?॥३॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ ! मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा-न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ?॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ? ॥ ५॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश !, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ? । जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति

वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन! संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति। तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो! शिथिलीभवन्ति, जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः। सद्यो भुजङ्गममया इव मध्यभाग-मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि। गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारको जिन! कथं भविनां? त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः। यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून-मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि

हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन। विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन? ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना-स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः। जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन?, चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः?। प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी? ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन! सदा परमात्मरूप-मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे। पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा किमन्य-दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः? ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश! भवतो भविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति। तीव्रान-

लाङ्उपललभावमपास्य लोके, चामीकरत्वम-चिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥ अन्तः सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ?। एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि, यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः । पानीयमप्यमृतमित्यनुचिन्त्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ?॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो ! हरिहरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश ! सितोऽपि शङ्खो, नो गृह्यते ? विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः । अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलो-

कः ? १९ ॥ चित्रं विभो ! कथमवाङ्मुख-वृन्तमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृष्टिः ? । त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !, गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति । पीत्वा यतः परमसंमदसङ्गभाजो, भव्या व्रजन्ति तरसाऽप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः। येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥२२॥ श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न-सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम्। आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-श्चामीकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥२३॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव । सान्निध्यतोऽपि यदि

वा तव वीतराग !, नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ?॥ २४ ॥ नो नोः प्रमादमवधूय नजध्वमेन–मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम्। एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्ननिनजः सुरडुन्डुन्निस्ते॥ २५ ॥ उद्योतितेषु नवता भुवनेषु नाथ!, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः। मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र–व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमच्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन, कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन। माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण नगवन्ननितोविनासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजो जिन ! नमत्त्रिदशाधिपाना–मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् । पादौ श्रयन्ति नवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ ! जन्मजलधेर्विपराङ्मु-

खोऽपि,यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ।
युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं
विभो ! यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥
विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्गतस्त्वं, किं-
वाऽक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ! । अज्ञा-
नवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फु-
रति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भार-
संभृतनभांसि रजांसि रोषा—दुत्थापितानि
कमठेन शठेन यानि । छायाऽपि तैस्तव न
नाथ ! हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव
परं दुरात्मा॥३१॥यद् गर्जदूर्जितघनौघम-
दभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधा-
रम् । दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, ते-
नैव तस्य जिन ! दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड—प्राल-
म्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः । प्रेतव्रजः प्र-
ति भवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याभवत्प्रति-

भवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ! ये त्रिसन्ध्य—माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः । भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो ! भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश!, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ? ॥३५॥ जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव !, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् । तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥३६॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन,पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि । मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ? ॥३७॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि

मया विधृतोऽसि भक्त्या । जातोऽस्मि तेन
जनबान्धव ! दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रति-
फलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ !
दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्य-
वसते वशिनां वरेण्य । भक्त्या नते मयि
महेश ! दयां विधाय, दुःखाङ्कुरोद्दलनतत्प-
रतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसङ्ख्यसारशरणं
शरणं शरण्य-मासाद्य सादितरिपुप्रथिता-
वदातम् । त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधान-
वन्ध्यो, वध्योऽस्मि चेद् भुवनपावन ! हा ह-
तोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवन्द्य ! विदिताखि-
लवस्तुसार !, संसारतारक विभो ! भुवना-
धिनाथ । त्रायस्व देव ! करुणाह्रद मां पु-
नीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः
॥४१॥ यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि संततिसंचितायाः ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः, स्वामी

त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥
इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र !, सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः । त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्षा, ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥४३ ॥
जननयनकुमुदचन्द्रप्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥
॥ इति श्रीकल्याणमन्दिरं संपूर्णम् ॥ ७ ॥

अथ म्होटी शान्तिः

भो भो भव्याः ! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका ! इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पान-

न्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्म्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य, सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे, विहितजन्माभिषेकः, शान्तिमुद्घोषयति यथा, ततोऽहं कृतानुकारमितिकृत्वा महाजनो येन गतः स पन्थाः इति भव्यजनैः सह समेत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि, तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानन्तरमितिकृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः॥

ॐ ऋषभ–अजित–संभव–अभिनन्दन–सुमति–पद्मप्रभ–सुपार्श्व–चन्द्रप्रभ–सुविधि–शीतल–श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल–अ-

नन्त—धर्म्म—शान्ति—कुन्थु—अर—मल्लि—
मुनिसुव्रत—नमि—नेमि—पार्श्व—वर्द्धमाना-
न्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु,
स्वाहा ॥ ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविज-
यदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्ग्गमार्गेषु रक्षन्तु वो
नित्यं स्वाहा॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति—मति—कीर्त्ति-
कांति—बुद्धि—लक्ष्मी—मेधा—विद्यासाधन—
प्रवेश—निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु
ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी—प्रज्ञप्ति—वज्र-
शृङ्खला—वज्राङ्कुशी—अप्रतिचक्रा—पुरुष-
दत्ता—काली—महाकाली—गौरी—गान्धारी-
सर्वास्त्रा महाज्वाला-मानवी-वैरोट्या—अच्छु-
प्ता—मानसी—महामानसी षोडश विद्यादे-
व्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचा-
र्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणस-
ङ्घस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥
ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्र-

शनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनाय[1]कोपेताः ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां । अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा। ॐपुत्र–मित्र[2]-भ्रातृ–कलत्र–सुहृत्-स्वजन–सम्बन्धि--बन्धुवर्गसहिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः अस्मिँश्च भूमण्डलायतननिवासिसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु। ॐ तुष्टिपुष्टिऋद्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः[3] । सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि । शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा । श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश–मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः

---

१ विनायका. २ भ्रातृमित्र. ३ भवन्तु इति शेषः

शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः। शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्टदुष्ट–ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादितहितसंप-न्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्री सङ्घजंगज्जानपद–राजाधिपराजसन्निवेशानाम्। गोष्ठिकपुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥ श्री श्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु। श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु । श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु । श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु; श्रीपौर[2]मुख्याणां शान्तिर्भवतु । श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु । श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु। ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा। एषा शान्तिः प्रति-

१ पौरजनपद. २ (पुरमुख्याणां) टीकायां गच्छाधिपानामिति चास्ति.

ष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु । शान्तिकलशं गृहीत्वा, कुङ्कुमचन्दनकर्पूरागुरुधूपवास-कुसुमाञ्जलिसमेतः । स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसङ्घसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्र-चन्दनाभरणालङ्कृतः पुष्पमालां कण्ठे कृ-त्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति । नृत्यन्ति नृत्यं म-णिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गला-नि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भव-न्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, स-र्वत्र सुखीभवन्तु लोकाः॥ २ ॥ अहं तित्थ-यरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी । अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु ।स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रस-

न्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्व्व-मङ्गलमाङ्गल्यं, सर्व्वकल्याणकारणम् । प्र-धानं सर्व्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति बृहच्छान्तिस्तवः ॥७॥ ७७ ॥

इतिनवस्मरणानि संपूर्णम्

॥ अथ श्रीरत्नाकरपञ्चविंशिकाप्रारम्भः ॥

उपजातिछन्दः ॥

श्रेयःश्रियां मङ्गलकेलिसद्म !, नरेन्द्रदे-वेन्द्रनताङ्घ्रिपद्म ! । सर्वज्ञ ! सर्वातिशय-प्रधान !, चिरं जय ज्ञानकलानिधान ॥ १ ॥ जगत्त्रयाधार ! कृपावतार !, दुर्वारसंसार-विकारवैद्य ! । श्रीवीतराग ! त्वयि मुग्ध-भावा-द्विज्ञ ! प्रभो ! विज्ञपयामि किञ्चित् ॥ २ ॥ किं बाललीलाकलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः? । तथा य-थार्थं कथयामि नाथ !, निजाशयं सानुश-

यस्तवाग्रे ॥ ३ ॥ दत्तं न दानं परिशीलितं च, न शालि शीलं न तपोऽभितप्तं । शुभो न भावोऽप्यभवभ्रवेऽस्मिन्, विभो ! मया भ्रान्तमहो मुधैव ॥४॥ दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यमहोरगेण । ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया–जालेन बद्धोऽस्मि कथं भजे त्वाम्? ॥५॥ कृतं मया ऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि लोकेश ! सुखं न मेऽभूत् । अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश ! जज्ञे भवपूरणाय ॥६॥ मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त–त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात् । द्रुतं महानन्दरसं कठोर–मस्मादृशां देव ! तदश्मतोऽपि ॥ ७ ॥ त्वत्तः सुदुष्प्राप्यमिदं मयाप्तं, रत्नत्रयं भूरिभवभ्रमेण । प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याग्रतो नायक ! पूत्करोमि? ॥ ८ ॥ वैराग्यरङ्गः[1] पर-

1 रङ्गोऽ

वञ्चनाय, धर्मोपदेशो जनरञ्जनाय । वादाय विद्याऽध्ययनं च मेऽभूत्, कियद्? ब्रुवे हास्यकरं स्वमीश ! ॥ ९ ॥ परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजनवीक्षणेन । चेतः परापायविचिन्तनेन,कृतं भविष्यामि कथं? विभोऽहम् ॥१०॥ विडम्बितं यत्स्मरघस्मरार्ति-दशावशात्स्वं विषयान्धलेन।प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ!सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥११॥ध्वस्तोऽन्यमन्त्रैः परमेष्ठिमन्त्रः,कुशास्त्रवाक्यैर्निहताऽऽगमोक्तिः । कर्त्तुं वृथा कर्म कुदेवसङ्गा-दवाञ्छि ही नाथ!मतिभ्रमो मे १२ विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवन्तं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः।कटाक्षवक्षोजगभीरनाभिकटीतटीयाः सुदृशां विलासाः ।१३।लोलेक्ष-

1 अंसलवत्सलादिवदौणादिकालप्रत्ययागमेन, विद्युत्पत्रान्धाद्वइति प्राकृतलक्षणेनेतिकश्चित् तन्न प्राकृतगन्धस्याप्यत्राभावात्, मुरलादेराकृतिगणत्वाच्च नालप्रत्ययप्रभवता.

णावक्रनिरीक्षणेन, यो मानसे[1] रागलवो विलग्नः। न शुद्धसिद्धान्तपयोधिमध्ये, धौतोऽप्यगात्तारक! कारणं किम्?॥१४॥अङ्गं न चङ्गं नगणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः। स्फुरत्प्रभा[2] न प्रभुता च काऽपि, तथाऽप्यहङ्कारकदर्थितोऽहम्॥१५॥आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि-र्गतं वयो नो विषयाभिलाषः। यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोहविडम्बना मे ॥ १६ ॥ नाऽऽत्मा न पुण्यं न भवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपीयम् । अधारि[3] कर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपि देव! धिङ् माम्॥१७॥ न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः। लब्ध्वाऽपि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयाऽरण्यविलापतुल्यम् ॥ १८ ॥ चक्रे

१ मानसो. २ प्रधानप्रभुता. ३ आधारि.

मयाऽसत्स्वपि कामधेनु–कल्पद्रुचिन्ता-मणिषु स्पृहार्त्तिः। न जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश ! मे पश्य विमूढभावम् ॥ १ए ॥ सद्भोगलीला नच रोगकीला, धनागमो. नो निधनागमश्च । दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिन्ति नित्यं मयकाऽधमेन ॥ २० ॥ स्थितं न साधोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च। कृतं न तीर्थोद्धरणादिकृत्यं, मया मुधा हारितमेव जन्म ॥ २१ ॥ वैराग्यरङ्गो न गुरूदितेषु, न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः । नाध्यात्मलेशो मम कोऽपि देव !, तार्यः कथंकारमयं भवाब्धिः ॥२२॥पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य-मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये । यदीदृशोऽहं मम तेन नष्टा, भूतोद्भव-

१ दुष्टोऽयं प्रयोग इति कश्चित्, स जडिमावष्टब्धान्तःकरण एव यतो न न्यग्भावि तेन युष्मदस्मदोऽसोभादिस्यादेः (श्रीसि० ७–३–३०) इति सूत्रम् ॥

दृष्टाविज्ञवत्रयीश ! ॥२३॥ किंवा मुधाऽहं बहुधा सुधाशुक्पूज्य! त्वदग्रे चरितं स्वकीयम्। जल्पामि यस्मात् त्रिजगत्स्वरूप-निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ? ॥ २४ ॥

शार्दूलविक्रीडितछन्दः ॥ दीनोद्धारधुरन्धरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा-पात्रं नात्र जने जिनेश्वर! तथाऽप्येतां न याचे श्रियम्। किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं, श्रीरत्नाकर ! मङ्गलैकनिलय ! श्रेयस्करं प्रार्थये ॥ २५ ॥

॥ इति रत्नाकरपञ्चविंशतिका संपूर्णा ॥

अथ सामायिक लेवानो विधि.

प्रथम स्थापनाचार्यजी न होय तो उंचे आसने पुस्तक आदि ज्ञानादिनुं उपकरण मुकीने श्रावक तथा श्राविकाए कटासणुं मुहपत्ति अने चरवलो लइ,शुद्ध वस्त्र सहित थइ, जग्या पुंजी कटासणुं पाथरी, ते उपर बेसी, मुहपत्ति डाबा

हाथमां मुख पासे राखी, ते वडे मुख ढांकी, जमणो हाथ उंधो स्थापनाजी सन्मुख राखीने एक नवकार तथा पंचिंदिय कहेवां[1]. पछी खमासमण दइ इरियावहि तस्सउत्तरी अन्नत्थऊससिएणं कही एक लोगस्सनो चंदेसुनिम्मलयरा सुधी (लोगस्स न आवडे तो चार नवकार) नो काउस्सग्ग करवो. नमो अरिहंताणं पद बोली काउस्सग्ग पारी लोगस्स कहेवो. पछी खमासमण दइ "इच्छाकारेण संदिसह जगवन्! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं?" कही कांइक विराम लइ इच्छं कही पचास बोल[2]

---

१ सेनप्रश्नना पाठप्रमाणे स्थापना त्रण नवकार अने उत्थापना एकनवकारे. २ सूत्रार्थतत्त्वकरी सद्दहुं ? सम्यक्त्वमोहनीय मिश्रमोहनीय मिथ्यात्वमोहनीय परिहरुं ४, कामराग स्नेहराग दृष्टिराग प० ७, सुदेव सुगुरु सुधर्म आदरुं १०, कुदेव कुगुरु कुधर्म प० १३, ज्ञानदर्शन चारित्र आ० १६, ज्ञानदर्शनचारित्रविराधना प० १९, मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्ति आ० २२, मनोदण्डवचनदण्डकायदण्ड प० २५, हास्यरत्यरति प० २८, जयशोकदुगुंछा प० ३१, कृष्णलेश्या नीललेश्या कापातलेश्या प० ३४, रसगारव ऋद्धिगारवसातागारव प० ३७, मायाशल्य नियाणशल्यमिथ्यात्वशल्य प० ४०, क्रोधमान प० ४२, मायालोज प०४४, पृथ्वीकायअप्कायतेउकायनीजयणा करुं ४७, वायुकाय वनस्पतिकाय त्रसकायनी रक्षा करुं ५०.

चिंतववा साथे मुहपत्ति पमिलेहवी. पठी खमासमण दइ "इछाकारेण संदिसह जगवन्! सामायिक संदिसावुं?" कही इछं कही खमासमण दइ"इछाकारेण संदिसह जगवन्! सामायिक ठाउं?" इछं कही बे हाथ जोमी एक नवकार गणी "इछकारि जगवन्! पसाय करी सामायिक दंमक उच्चरावोजी" कही, गुरु अथवा वडिल होय तो तेओनी पासे करेमिजंते उचरवुं,नहितर पोतानी मेले करेमिजंतेनो पाठ बोलवो. पठी खमासमण दइ "इछाकारेण संदिसह जगवन्! बेसणे संदिसावुं" "इछं" कही, पठी खमासमण दइ,"इछाकारेण संदिसह जगवन्! बेसणे ठाउं? इछं" कहेवुं. पठी खमासमण दइ " इछाकारेण संदिसह जगवन्! सज्फाय संदिसावुं?" इछं कही खमासमण दइ 'इछाकारेण संदिसह जगवन् सज्फाय करुं ? इछं' कही त्रण नवकार गणवा. पठी बे घमी वांचवा आदिए करी धर्मध्यान करवुं अथवा नवकारवाली गणवी. विकथादि प्रमादमां पमवुं नहि.

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

प्रथम चरवलो लइ उन्ना थइ खमासमण द-इ इरियावहि पमिक्कमी यावत् काउस्सग्ग करी लोगस्स कही खमासण दइ "इच्छाकारेण संदिसह जगवन्! मुहपत्ति पमिलेहुं? इच्छं" कही, मुहपत्ति पमिलेही खमासमण दइ "इच्छाकारेण संदिसह जगवन्! सामायिक पारुं[1]?" गुरुए आदेश आ-प्या पछी यथाशक्ति कही खमासमण दइ "इ-च्छाकारेण संदिसह जगवन्! सामायिक पार्युं[2]" कही कंइक विसामा पछी तहत्ति कही पछी जमणो हाथ चरवला उपर अथवा कटासणा उपर स्थापी एक नवकार गणी 'सामाइयवयजुत्तो०' कहेवो, पछी जमणो हाथ स्थापना सामे सवलो राखीने एक नवकार गणवो, अहीं उपरा उपर त्रण सामायिक के बे सामायिक करवां होय तो दरेक सामायिक लेतां लेवानी विधि करवी, पण वखतो वखत पा-रवुं नही. बे सामायिक करवां होय, तो बे पूरा थ-

---

१ अहीं गुरु 'पुणोवि कायव्वो' कहे. २ अहीं गुरु 'आयारो न मोत्तव्वो' कहे.

ये अने त्रण सामायिक करवा होय तो त्रण पूरा थये एक वार पारवुं, एवी प्रवृत्ति छे. एक सामटा आठ दश सामायिक करवां होय तो त्रण त्रण सामायिक सुधी आ विधि जाणवो.[1]

॥ अथ चैत्यवंदन करवानो विधि ॥

प्रथम त्रण खमासमण दइने पछी " इच्छाकारेण संदिसह जगवन् ! चैत्यवंदन करुं?" कही, 'इच्छं' कही, चैत्यवंदन, जंकिंचि० कही, पछी बे कुणी पेट उपर राखी बे हाथ जोमी अंजली करी 'नमुत्थुणं' कहेवुं. पछी मुक्ताशुक्तिमुद्राए (बे हाथ पोला जोमी, माथा सुधी उंचा राखी) 'जावंति चेइआइं' कही, खमासमण दइ तेज मुद्राए जावंतकेविसाहू कही, पछी अंजली करी 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुज्यः' तेमज उवसग्गहरं० अथवा गमे ते सुविहितनुं करेलुं स्तवन कहेवुं. पछी मुक्ताशुक्तिमुद्राए जयवीयराय आजवमखंमा सुधी कही हाथ जरा

---

१ लगोलग सामायक लेवुं होय त्यारे बीजुं त्रीजुं सामायिक लेतां 'सज्झाय करुं' ना बदले 'सज्झायमां छुं' एम कही त्रण नवकारना बदले एक नवकार गणवो.

नीचा उतारी जयवीयराय पूरा कहेवा; पछी उभा थइ बे पग वच्चे चार आंगल अंतर राखी बे हाथे अंजली करी "अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ ऊससिएणं०" कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करवो. पछी नमो अरिहंताणं कही, 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कही, 'थोयजोडामांहेनी पहेली थोय कहेवी.'

॥ अथ गुरुवंदन करवानो विधि ॥

प्रथम बे खमासण दई 'इच्छकार सुहराइ०' थी सुखशातापूछवी पछी खमासमण दई 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइयं[1] खामेउं?' कही अब्भुट्ठिउं कहेवो. पछीपच्चक्खाण करवुं,

॥ अथ पच्चक्खाण पारवानो विधि ॥

प्रथम " इरियावहियाए०" पडिक्कमी, यावत् " जगचिंतामणि०" नुं चैत्यवंदन " जयवीयराय०" सुधी करवुं.

पछी "मन्नहजिणाणं०" नी सज्झाय कही, मुहपत्ति पडिलेहवी. पछी खमासमण दइ 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पच्चक्खाण पारुं?'

---

१ बपोर पछीना वखतमां देवसियं कहेवुं.

"यथाशक्ति" इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पार्युं. "तहत्ति" एम कही, जमणो हाथ कटासणा अथवा चरवला ऊपर स्थापी, एक "नवकार" गणी, पच्चक्खाण कर्युं होय तेनुं नाम कहीने पारवुं. ते लखीये छीये—"उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साढपोरिसिं, गंठिसहिअं, मुठिसहियं पच्चक्खाण कर्युं चउविहार; आंबिल, निवी, एकासणुं, बेआसणुं, पच्चक्खाण कर्युं तिविहार; पच्चक्खाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जं च न आराहिअं, तस्स मिच्छामिदुक्कडं." एम कही एक नवकार गणवो ॥इति॥

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

: नवकार पंचिंदिय कही इरियावहियाए कहेवुं, (स्थापना होय तो नवकार पंचिंदिअ न कहेवा.) पछी तस्स उत्तरी अन्नत्थ० कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण दइ, 'इच्छा० पडिलेहण करूं? इच्छं' कही, उभे पगे बेसी मुहपत्ती, चरवलो, कटासणुं, उत्तरासण, धोतीयुं, कंदोरो आदिनुं पडिलेहण करवुं.

पछी इरियावही पडिक्कमी काजो काढी, जीव कलेवर सचित्त आदि जोवुं, पछी काजो काढनार स्थापनाजी सामो उभो रही, इरियावही पडिक्कमी, काजो परठववा जग्या शोधी, त्रणवार 'अणुजाणह जस्सुग्गहो' कही काजो परठवीने पछी त्रण वार "वोसिरे" कहे ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावही पडिक्कमवाथी मांडीने यावत् लोगस्स कही, पछी उत्तरासण नाखी, चैत्यवंदन, " नमुत्थुणं०" कही, " जयवीयराय० आभवमखंडा " सुधी हाथ जोडी कहे. वली फरी " चैत्यवंदन " कहीने " नमुत्थुणं०" कही, यावत् चार थोयो कहीये तिहां सुधी बधुं कहेवुं; पछी "नमुत्थुणं०" कही, वली चार थोयो कहीये त्यां सुधी बधुं कहेवुं; पछी "नमुत्थुणं०" तथा बे " जावंति " कही, स्तवन कही, "जयवीयराय आभवमखंडा " सुधी कही, पछी " चैत्यवंदन " कही, "नमुत्थुणं०" कही, आखा " जयवीयराय " कहेवा. पछी इछा० सज्झाय करुं कही नवकार

गणी मन्नहजिणाण०नी सज्झाय कहेवी. इहां सवारे देव वांदवा तेमां " मन्हजिणाणं०" नी सज्झाय कहेवी, अने मध्यान्हे तथा सांझे देव वांदवामां सज्झाय न कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमणविधि ॥

प्रथम पूर्वनी रीतिये सामायिक लेवुं. पछी पाणी वापर्युं होय तो खमासण दइ "इछा० संदि० जग० मुहपत्ति पडिलेहुं? इछं" एम कही बेसीने फक्त मुहपत्ति पडिलेहवी अने जो आहार वापर्यो होय तो बे वांदणां देवां; त्यां बीजा वांदणामां "आवस्सियाए" ए पद न कहेतां अवग्रहमां ज उभा रहीने " इछकारी जग० पसाय करी पच्चख्काणनो आदेश देशोजी" एम कहेवुं, पछी वडिल पच्चख्काण करावे या पोते यथाशक्ति पच्चख्काण करे. पछी खमासमण दइ उभा थइ "इछा०संदि०जग० चैत्यवंदन करुं ?" एम कहेवुं; पछी बेसीने वडिल चैत्यवंदन करे वडिल न होय तो पंचांग प्रणिपातथी (बंने ढींचण जमीन उपर स्थापी) पोते करे. पछी "जं किंचि०"कहेवुं.पछी नमुत्थुणं० कही उभा

वसिउं अइआरो० कही संपूर्ण वंदित्तु कहेवुं. पण तेमां "तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि" ए पद बोलतां उभा थवुं अने अवग्रहनी बहार जइने वंदित्तु पूरुं करवुं. पछी बे वांदणां देवां. बीजा वांदणामां अवग्रहमां उभा होइए त्यां " इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसिअं खामेउं ? इच्छं खामेमि देवसिअं " कहीने भमणो हाथ चरवला उपर स्थापी जंकिंचि अपत्तिअं इत्यादि पाठ बोलतां अब्भुट्ठिओ खामवो. पछी अवग्रह बहार नीकलीने बे वांदणां देवां. बीजुं वांदणुं पूरुं थाय त्यारे अवग्रहनी बहारनीकली,आयरिय उवज्झाए कहेवुं.पछी करेमि भंते०इच्छामि ठामि० तस्स उत्तरी, अन्नत्थ० कही,बे लोगस्स अथवा न आवडे तो आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो. (शांति के खराब स्वप्नना काउस्सग्ग शिवाय बीजी बधी जगोए लोगस्सना ज्यां ज्यां काउस्सग्ग आवे त्यां त्यां 'चंदेसु निम्मलयरा' सुधी ज गणवानुं ध्यानमां राखवुं) पछी पारीने लोगस्स, सव्वलोए अरिहंत चेइ० अ-

न्नत्थ० कही, एक लोगस्स, या चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, पुरकरवरदी० सुअस्स नगवओ करेमि काउ० वंदण० कही, अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो या चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पुरकरवरदी० सुअस्स नगवउं करेमिकाउ० वंदण० कही, अन्नत्थ० कही एक लोगस्सनो या चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी सिद्धाणं बुद्धाणं कहेवुं. पठी "सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, नमोऽर्हत्० कही पुरुषे सुअदेवयानी थोय (अहीं स्त्री होय तो ते कमलदलनी स्तुति कहे) कहेवी, पठी " खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ० कही, एक नवकारनो काउसग्ग करी, पारी, नमोऽर्हत्० कही, जीसे खित्ते साहू० नी थोय कहेवी. (अहीं पण स्त्री होय तो ते यस्याः क्षेत्रं ० नी थोय कहे) पठी एक नवकार गणी बेसीने मुहपत्ति पमिलेहवी. पठी बे वांदणां देवां. पठी अवग्रहमां ज उन्ना उन्ना " सामायिक, चउवीसत्थो, वांदणां, पडिक्कमणुं, काउ-

स्सग्ग, पच्चक्खाण कर्युं छेजी." "इच्छामो अणु-
सट्ठिं" एम कही बेसीने "नमो खमासमणाणं,
नमोऽर्हत्० इत्यादि" पाठ कही, नमोऽस्तु वर्द्ध-
मानाय० कहेवुं. (अहीं स्त्री होय तो ते संसा-
रदावा०नी त्रण थोय कहे) पछी नमुत्थुणं कही
" इच्छाकारेण संदि० जग० स्तवन जणुं ? इच्छं "
एम कही स्तवन कहेवुं (स्तवन पूर्वाचार्यनुं
बनावेलुं ओछामां ओछुं पांच गाथानुं होवुं जो-
इए). पछी वरकनक० कही पूर्वनी पेठे जग-
वानादिचारने जगवानहं विगेरे कही चार ख-
मासणवडे थोजवंदन करवुं. पछी जमणो हाथ
चरवला या जूमिपर स्थापी अड्ढाइज्जेसु० कहेवुं.
पछी उजा थइ " इच्छा० संदि० जग० देवसिअ-
पायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं, देव-
सिअपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं"
अन्नत्थ० कही चार लोगस्स या सोल नवका-
रनो काउस्सग्ग करी, पारी, प्रगट लोगस्स
कहेवो. पछी बे खमासण देवा पूर्वक "सज्झाय
संदिसावुं? इच्छं. सज्झाय करुं ? इच्छं" एवी
रीते बे आदेश मागी बेसीने एक नवकार ग-

णीने वमिल अगर तेनो आदेश मागी पोते सज्झाय कहे. पछी एक नवकार गणी उना थइ खमासण दइ "इच्छा० संदि० जग० दुक्खक्खयकम्मक्खयनिमित्तं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं दुक्खक्खयकम्मक्खयनिमित्तं करेमि काउस्सग्गं" एम कही अन्नत्थ० कही संपूर्ण चार लोगस्स या सोल नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, नमोऽर्हत् कही, एक जण 'लघुशांति' कहे; अने बीजा काउस्सग्गमां सांभले. पछी काउस्सग्ग पारी, लोगस्स कही खमासण दइ इरियावही० तस्सउत्तरी० अन्नत्थ० कही,एक लोगस्स या चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी,लोगस्स कहेवो. पछी बेसी चउक्कसाय,नमुत्थुणं,जावंतिचेइयाइं०कही खमासण दइ जावंत केविसाहू, नमोऽर्हत्० उवसग्गहरं० कही,बे हाथ ललाटे लगामी जयवीयराय कही, खमासण दइ, "इच्छा० संदि० जग० मुहपत्ति पमिलेहुं?" कही मुहपत्ति पमिलेहवी.पछी उना थइ बे खमासमण देवा पूर्वक अनुक्रमे "इच्छा० संदि० जग० सामायिक पारुं ?यथाशक्ति" तथा "इच्छा० संदि० जग०

सामायिक पार्युं. तहत्ति" कही, सामायिक पारवानी विधि प्रमाणे सामाइयवयजुत्तो० कहेवा पर्यंत सर्व कहेवुं. पछी स्थापना स्थापी होय तो जमणो हाथ सवलो स्थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणवो इति.

॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम पूर्व रीतिए सामायिक लेवुं, पछी खमासमण दइ "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी[1] राइपायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं, कुसुमिण दुसुमिणउड्डावणी राइपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं" एम कही अन्नत्थ० कही काम भोगादिनां ते रात्रिए कुस्वप्न आव्यां होय तो सागरवरगंभीरा[2] सुधी अने बीजां दुःस्वप्न आव्यां[3] होय तो चंदेसु निम्मलयरा सुधी चार लोगस्स या सोल नवकारनो काउस्सग्ग करी, पा-

---

१ उंहरावणी अगर उड्डावणी. २ काम भोगादि कुस्वप्न आव्यां होय तो चंदेसुनिम्मलयरा सुधी चार लोगस्स अने एक नवकारनो काउस्सग्ग करवानो पण विधि छे. ३ न आव्यां होय तो पण.

री प्रगट लोगस्स कहेवो. पछी खमासमण दइ "इछाकारेण संदि० जग० चैत्यवंदन करुं? इच्छं." एम कही बेसीने पंचांग प्रणिपाते जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय० पर्यंत करवुं. पछी जगवानादि चारने थोजवंदन करवुं. पछी उजा थइ बे खमासमण देवा पूर्वक सज्जायनो आदेश मागी बेसीने एक नवकार गणी, जरहेसर०नी सज्झाय कहेवी. पछी इछकार सुहराइ सुख तपनो पाठ कहेवो, पछी "इछाकारेण संदि० जग० राइपम्किमणे ठाउं ? इछं" एम कही जमणो हाथ उपधि उपर स्थापी सवस्सवि राइय डुच्चिंतिअ० नो पाठ कहेवो. पछी नमुत्थुणं कही उजा थइ करेमिजंते, इछामिठामि, तस्सउत्तरी, अन्नत्थ० कही, लोगस्स या चार नवकारनो काउस्सग्ग करवो. पछी लोगस्स, सवलोए अरि० अन्नत्थ० कही एक लोगस्स या चार नवकारनो काउस्सग्ग करवो. पछी पुक्खरवरदी० सुअस्स जगवउ० वंदण० अन्नत्थ० कही आठ गाथानो या आठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही

बेसीने त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहवी. पछी उन्ना थइ वांदणां बे देवां. पछी "इच्छाकारेण संदि० जग० राइयं आलोउं? इच्छं" आलोएमि जो मे राइउं० नो पाठ कहेवो; पछी सात-लाख, अढार पापस्थानक, "सव्वस्सवि राइय०" देवसि प्रतिक्रमणनी पेठे कहेवुं. पछी बेसीने वीरासन (?) न आवडे तो जमणो ढींचण उन्नो राखी नवकार, करेमिजंते, इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइउं० कही वंदित्तु कहेवुं. ४३ मी गाथामां "अब्जुठिउंमि" पद कहेतां उन्ना थइ वंदित्तु पुरुं कही, वांदणां बे देवां. पछी अ-वग्रहमांज रही आदेश मागी अब्जुठिउंमि० खामीने अवग्रह बहार नीकली वांदणां बे देवां. पछी आयरिय उवज्झाए० कहेवुं. पछी इच्छामि-ठामि० तस्स० अन्नत्थ० कही सोल नवकारनो काउस्सग्ग करी (अत्र तपचिंतवणीनो काउ-स्सग्ग करवानो छे) पारी, प्रगट लोगस्स कही बेसीने छठा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेहीने उन्ना थइने वांदणां बे देवां. पछी अवग्रहनी अंदर रहीने सकलतीर्थ कहेवुं. पछी आदेश

मागी यथाशक्ति पच्चक्काण करवुं. पछी छ आ-
वश्यक देवसिअनी पेठे संजारवां. पछी " इ-
च्छामो अणुसहिं " कही बेसीने नमो खमास-
मणाणं नमोऽर्हत्० कही विशाललोचनदलं०
कहेवुं, (अहीं स्त्रीए संसारदावानी त्रणथोय
कहेवी) पछी नमुत्थुणं कही उजा थइ अरि०
अन्नत्थ० एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी,
नमोऽर्हत० कही, कल्लाणकंदंनी प्रथम थोय क-
हेवी. पछी लोगस्स, पुक्करवरदी० सिद्धाणं
बुद्धाणं० कहेवा पूर्वक देववंदन करीए छीए
ते विधिए देवसि प्रतिक्रमणनी पेरे कल्लाण-
कंदंनी चोथी थोय कहेवा पर्यंत सर्व विधि
करवी. पछी बेसीने नमुत्थुणं० कही जगवानादि
चारने थोजवंदन करवुं. पछी जमणो हाथ
उपधि उपर स्थापी, अड्ढाइज्जेसु कहेवुं. पछी
बंने ढींचण जूमि पर स्थापी इशानकोण सन्-
मुख बेसी या ते दिशा मनमां चिंतवीने ख-
मासमण दइ श्रीसीमंधरस्वामिनुं चैत्यवंदन,
स्तवन, जयवीयराय, थोय पर्यंत विधि पूर्वक
करवुं; तेमां अरिहंत चेइ० थी उजा थइने

विधि करवी. तेज प्रमाणे खमासमण दइ श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, थोय पर्यंत विधि पूर्वक करवुं. पछी सामायिक पारवानीरीतिए सामायिक पारवुं. इति.

ता. क. गुरु महाराज होय त्यारे तेओ जेम आदेश मागे छे, तेओ काउस्सग्ग पारे त्यारे आपणे पारीये छीए, कंइ सूत्र कहेवुं होय त्यारे तेउनी पासे कहेवानो आदेश मागीए छीए; तेज प्रकारे तेमने विरहे करेमिभंते उच्चरावनार ज्ञान वृद्ध प्रत्ये पण प्रतिक्रमण करती वखते विनयथी वर्तवुं योग्य छे.

॥ अथ पक्खिप्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम देवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहिये तिहां सुधी सर्व कहेवुं; पण चैत्यवंदन सकलार्हतूनुं कहेवुं, अने थोयो स्नातस्यानी कहेवी. पछी खमासमण दईने देवसिअ आलोइअ पक्किंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खिमुहपत्ति पडिलेहुं ? एम कही मुहपत्ति पडिलेहवी, पछी वांदणां वे देवां, पछी इच्छाकारेण० संदि० भग० अब्भुट्ठिउहं संबुद्धाखामणेणं अब्भिंतरपक्खिअं खामेउं ? इच्छं खामेमि पक्खिअं,

[1]पनरस दिवसाणं, पनरस राइआणं, जंकिंचि अपत्तियं० कही इच्छाकारेण सं० भग० पक्खिअं आलोउं? इच्छं आलोएमि जो मे पक्खिउ अइआरो कउ० कही "इच्छाकारेण० पक्खि अतिचार आलोउं ?" एम कही अतिचार कहिये. पछी "एवंकारे श्रावकतणे धर्मे श्रीसमकित मूल बारव्रत एकसो चोवीश अतिचार मांहे जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुउ होय, ते सव्वे हुं मने वचने काया करी मिच्छामि दुक्कडं" कही "सव्वस्सवि पक्खिअ दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! [2]इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं" कही. "इच्छकारि ! भगवन् पसाय करी पक्खितप प्रसाद करोजी." एम उच्चार करीने आवी रीते कहिये:—"चउत्थे णं, एक उपवास, बे आंबिल, त्रण नीवि. चार एकासणां, आठ बेआसणां, बे हजार सज्झाय यथाशक्ति तपकरी पहोंचाडवो." पछी प्रवेश[3] कर्यो होय तो, 'पइठि-

१ एक पक्खाणं (अंतोपक्खस्स) पन्नरसराइंदियाणं. २ गुरु पडिक्कमेह कहे पछी. ३ तप.

उं' कहीये, अने करवो होय तो 'तहत्ति' कही-
ये, तथा न करवो होय तो अणबोल्यो रहीये.
पछी वांदणां बे देवां. पछी इछाका० अब्भुठिउंऽहं
पत्तेअखामणेणं अप्भिंतरपक्खिअं खामेउं ?
इछं खामेमि पक्खिअं, पंनरस[2] दिवसाणं पनरस
राइआणं जंकिंचि अपत्तियं० कही वांदणां बे
देवां. पछी देवसिअ आलोइअ पमिक्कंता इछा-
का० संदि० जगवन्० पक्खिअं पमिक्कमुं[3] ? स-
म्मं पमिक्कमामि, एम कही करेमिजंते सामा-
इय० कही, इछामि पमिक्कमिउं जो मे पक्खिउं०
कहेवुं. पछी खमासमण दइ इछाकारेण संदि०
पक्खिसूत्र कहुं. एम कही त्रण नवकार गणी
साधु होय तो पक्खिसूत्र कहे अने साधु न
होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तु
कहे. पछी सुअदेवयानी थोय कहेवी. पछी हेठा
बेसी जमणो ढिंचण ऊंचो राखी, एक नवकार
गणी, करेमिजंते० इछामि पमि० कही वंदित्तु

१ यथाशक्ति केटलाक बोले छे. २ एक पक्खाणं पनर-
सदिवसाणं पनरसराइआणं ३ पक्खिअं पमिक्कमावेह? गुरु
कहे 'सम्मं पमिक्कमह!' शिष्य कहे 'इछं, सम्मं पमिक्कमामि.'

कहेवुं.पछी करेमि भंते० इछामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिउ० तस्सउत्तरी० अन्नत्थ० कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवा, अथवा अमृतालीश नवकारनो काउस्सग्ग करी पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुहपत्ति पडिलेहिने, वांदणां बे देवां. पछी 'इछाका० अब्भुठिओऽहं समत्तखामणेणं अब्भिंतर० पक्खिअं खामेउं? इछं खामेमि पक्खिअं,एकपख्काणं, पनरस राइयाणं, पनरसदिवसाणं जं किंचि अपत्तिअं० कही पछी खमासमण दइने इछाका० पक्खि खामणा खामुं? एम कही खामणां चार खामवां. पछी देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कह्या पछी बे वांदणां दइए तिहांथी ते सामायिक पारीये त्यांसुधी सर्व देवसीनी पेठे जाणवुं,पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणे ज्ञानादि०नी थोयो कहेवी.स्तवन अजितशांतिनुं कहेवुं. सज्झायने ठेकाणे उवसग्गहरं तथा संसारदावानी थोयो चार कहेवी, अने लघुशांतिने ठेकाणे म्होटी शान्ति कहेवी ॥ इति पक्खिप्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधिः ॥

॥ एमां उपर कह्या मुजब पख्किनी विधि प्रमाणे करवुं पण एटलुं विशेष जे बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो अने पख्किना शब्दने ठेकाणे चउमासीनो शब्द कहेवो तथा तपने ठेकाणे "छठ्ठेणं, बे उपवास, चार आंबिल, छ नीवि, आठ एकासणां, सोल बेआसणां, चार हजार सज्झाय०" ए रीते कहेवुं ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमणविधिः ॥

॥ एमां पण उपर लख्या मुजब पख्किनी विधि प्रमाणे करवुं; पण एटलुं विशेष जे बार लोगस्सना काउस्सग्गने ठेकाणे चालीश लोगस्स ने एक नवकार अथवा एकसो ने साठ नवकारनो काउस्सग्ग करवो अने तपने ठेकाणे "अठ्ठमभत्तं, त्रण उपवास, छ आंबिल, नव नीवि, बार एकासणां, चोवीस बेआसणां, अने छ हजार सज्झाय०" ए रीते कहेवुं. अने पख्किना शब्दने ठेकाणे संवत्सरीनो शब्द कहेवो॥ इति संवत्सरीप्रतिक्रमणविधिः